सुरभिः

कक्षा – 6

सत्र 2019–20

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।

विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढ़े एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉच करे —> App की समस्त अनुमति को स्वीकार करें —> उपयोगकर्ता Profile का चयन करें।

1 पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।

2 मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।

3 सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

1 QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

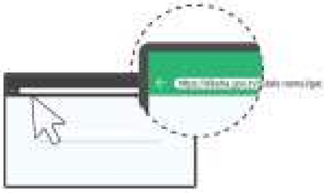

2 ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

3 सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

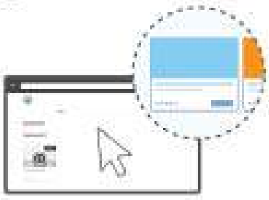

4 प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

नि:शुल्क वितरण हेतु

प्रकाशन वर्ष – 2019

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

सहयोग

PRR9HI

(1) डॉ. रमाकान्त अग्निहोत्री, प्राध्यापक
भाषा विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

(2) डॉ. मनीषा पाठक, सेवा निवृत्त प्राचार्या

(3) डॉ. तोय निधि वैष्णव, प्राध्यापक, शा.दू.श्री वै.स्नातकोत्तर, संस्कृत महाविद्यालय, रायपुर

संयोजक

डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

समन्वयक एवं सम्पादक

श्री बी. पी. तिवारी, सहायक प्राध्यापक, एस. सी. ई. आर. टी., रायपुर

लेखक-समूह

श्री बी.पी. तिवारी, डॉ. मनीषा पाठक, डॉ. तोयनिधि वैष्णव, डॉ. कुमुद कान्हे, श्री आर. पी. वाजपेयी, श्री शंकर लाल ध्रुव, श्रीमती प्रभावरी झा, श्रीमती मीना पाण्डेय, डॉ. एस. आर. शर्मा, श्रीमती उषापवार सिंह

चित्राङ्कन

राजेन्द्र सिंह ठाकुर, समीर श्रीवास्तव

पृष्ठ सज्जा

रेखराज चौरागड़े

आवरण पृष्ठ

हेमंत अभयंकर

सहयोग

आसिफ, भिलाई, सुरेश साहू, मुकुन्द साहू

फोटोग्राफ्स

संस्कृति विभाग के सौजन्य से, रायपुर

प्रकाशक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रक

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – ....

प्राक्कथन

शिक्षण में पाठ्यपुस्तकों की उपादेयता महत्वपूर्ण सहायक उपकरण के रूप में होती है । इसके माध्यम से छात्रों के व्यवहार में वाञ्छित परिवर्तन लाने हेतु प्रयास किया जाता है, जिससे उन्हें नये ज्ञान एवं अनुभवों की सम्प्राप्ति सुगमतापूर्वक हो जाती है । संस्कृत विषय की नवीन पाठ्यपुस्तकों का सर्जन छत्तीसगढ़ राज्य की आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं के अनुरूप किया गया है ।

हमारी शिक्षा में संस्कृत का विशेष महत्व है। भारतीय संस्कृति के संरक्षण तथा हिन्दी भाषा और साहित्य के सम्यक् ज्ञान के लिए सम्प्रति संस्कृत का ज्ञान परमावश्यक है । कक्षा छठवीं में पठन-पाठन की व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए यह पाठ्यपुस्तक नवीन पाठ्यक्रम पर आधारित है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुरूप विद्यालयों के प्रत्येक स्तर पर न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति पर बल दिया गया है । पाठ्य सामग्री का चयन छात्रों की मानसिक दक्षता व रुचि को ध्यान में रखकर किया गया है। संस्कृत शिक्षण को अधिक सरल, सुबोध एवं व्यवहारपरक बनाने की दृष्टि से पाठ्यसामग्री का चयन सामान्य जन-जीवन में क्रियाकलापों के आधार पर किया गया है । इस पाठ्यपुस्तक में निम्नलिखित बिन्दुओं पर विशेष बल दिया गया है-

1. पाठों की सरल भाषा व प्रस्तुतीकरण की रोचक विधि ।
2. भाषायी कौशलों का विकास ।
3. संवाद वाक्य एवं उसकी शब्दावली अगली कक्षाओं में छात्रों की समझ को पुष्ट बनाएगी ।
4. पाठ्यपुस्तक छात्रों में अपने राष्ट्र एवं संस्कृति के प्रति समादर एवं भावनात्मक एकता उत्पन्न करनेपर पुनःबल देगी ।
5. आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कार, कम्प्यूटर (संगणक), फ्रिज (शीतलक यंत्र), रेडियो, वायुयान, दूरदर्शन एवं चलित दूरभाष (मोबाइल) एवं पर्यावरण गीतम् पाठ, छत्तीसगढ़ के पर्व, पौराणिक कथा, पञ्चतन्त्र कथा, प्रहेलिका, आहारः (स्वास्थ्य), वर्षागीतम्, वसन्त वर्णनम्, राष्ट्रीय पर्व, महापुरुषों की जीवनी, नीतिश्लोकाः, सूक्तयः आदि का समावेश इसमें प्रासङ्गिकता व नवीनता लाएगी।
6. प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यास के प्रश्न दिए गए हैं। इस बात का ध्यान रखा गया है कि भावबोध एवं क्रियात्मक अभ्यास के प्रश्नों द्वारा पाठ में निहित मर्म (अवधारणाएँ), भाषा-शैली एवं शिक्षण-विधियों के विविध पक्ष ग्राह्य एवं अभिव्यक्ति क्षमता दे सकें । फलस्वरूप वे अपनी वर्तनी, उच्चारण, शब्द एवं वाक्य-रचना सम्बन्धी दक्षताओं एवं प्रवीणताओं में निखार ला सकें।
7. पाठ्यपुस्तक में छात्र-क्रिया कलाप (गतिविधियों) पर विशेष बल दिया गया है।
8. पाठ्यसामग्री को रोचक बनाने हेतु आवश्यक चित्रों का भी यथास्थान समावेश किया गया है ।

बच्चों के मन में संस्कृत भाषा के प्रति रुचि तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति क्षमता विकसित करने में शिक्षण विधा की महती भूमिका होती है। अतः कक्षा-शिक्षण के समय पाठ्यसामग्री का रचनात्मक उपयोग परमावश्यक है। पाठ्यपुस्तक विकास की सहभागिता आधारित प्रक्रिया के अंतर्गत विषय विशेषज्ञों के गहन विचार-विमर्श के उपरान्त पाठ्यपुस्तक का विकास किया गया है । संस्कृत पाठ्यपुस्तक के उन सभी विशेषज्ञों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिनके ज्ञान,अनुभव और सतत् परिश्रम से इस पुस्तक को आकार मिला है ।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से Energized Text Books एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। ETBs का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

पाठ्यक्रम

पाठ्यविषय- संस्कृत विषय को रुचिकर बनाने के लिये गद्य, पद्य कथा, नाटक तथा संवाद पाठों का उचित मात्रा में समायोजन किया गया है.

2. पाठ्य पुस्तक में अन्तर्निहित पाठ्य विषय छात्रों में राष्ट्र एवं संस्कृति के प्रति भावनात्मक एकता को बढायेंगे.

3. कक्षा 6 संस्कृत में पठन-पाठन की व्यवस्था को दृष्टिगत रखते हुए वैज्ञानिक आविष्कार सङ्गणक, फ्रीज,रेडियो, वायुयान, चलितदूरभाष (मोबाइल), पर्यावरण गीत छत्तीसगढ के पर्व, वर्षागीतम्, बसन्तवर्णनम्, राष्ट्रीय पर्व, महापुरुषों की जीवनी,नीतिश्लोक, सूक्ति, आदि पाठों को समावेशित किया गया है.

कौशलपरक दक्षताएँ-

1. श्रवण- छात्र संस्कृत की विशिष्ट ध्वनियों को सुनकर पहचान सकेगा. जिसमें अकारान्तपद विसर्ग,

अनुनासिक एवं अनुस्वार की ध्वनियाँ,संयुक्ताक्षर ऊष्म ध्वनियाँ आदि.

2. संस्कृत के सरल वाक्यों को सुनकर अर्थ समझ सकेगा.

2. **भाषण-** संस्कृत ध्वनियों से बने पदों का शुद्ध उच्चारण कर सकेगा.

2. पाठ्यपुस्तक में आए सुभाषितों को कण्ठस्थ कर सुना सकेगा.

3. संस्कृत में छोटे-छोटे सरल प्रश्नों का उत्तर दे सकेगा.

3. **वाचन-** 1. सरल संस्कृत गद्यांश का शुद्ध वाचन कर सकेगा.

2. सुभाषितों को कण्ठस्थ कर सुना सकेगा.

4. **लेखन-** सरल शब्दों का शुद्ध वर्तनी में लेखन कर सकेगा.

2. सरल संस्कृत वाक्यों को सुनकर शुद्ध रूप से लिख सकेगा.

5. **चिन्तन-** पाठ्यपुस्तक को पढ़कर अथवा सुनकर उसमें विद्यमान गुण-दोषों के विषय में मत रख सकेगा.

6. **भाषिक तत्व-** 1. वाक्य में विशेष्य के साथ सही विशेषण का अन्वय कर सकेगा.

2. वाक्य में प्रयुक्त नाम पर (संज्ञा, सर्वनाम) के साथ क्रिया पदों का अन्वय कर सकेगा.

3. संस्कृत में सरल प्रश्न पूछ सकेगा तथा उनमें उत्तर भी दे सकेगा.

7. **अभिरुचि**- बालगीतों, कहानी एवं संवाद के माध्यम से संस्कृत के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना .

संस्कृत व्याकरण-

संज्ञा- अकारान्त पुल्लिङ्ग- बालक, नर, देव, वृक्ष आदि.

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग - पुस्तक, पुष्प, वन,जल, फल, नयन, मुख, ग्रह, वस्त्र, भोजन, शयन, शरण, नगर स्थान आदि.

अकारान्त स्त्रीलिङ्ग- बालिका,शाला,रमा, कन्या, बाला, जनता, तृष्णा परीक्षा, लता, यात्रा,वर्षा, विद्या, सेवा, कथा, सभा आदि।

इकारान्त पुल्लिङ्ग- मुनि, हरि, कवि, कपि, रवि, आदि।

उकारान्त पुल्लिङ्ग-धेनु, तनु, चञ्चु, रज्जु आदि।

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग - नदी, वाणी, भारती, भागीरथी, भगिनी, सरस्वती, जननी, पृथ्वी आदि।

सर्वनाम - अस्मद्, युष्मद्, तद्, किम्

विशेषण - (संख्यावाची) एक से पाँच तक

संख्यावाचक एक, द्वि, त्रि, चतुर् एवं पञ्चन् शब्द के रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं।

उपसर्ग - प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुर्, पुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप।

कारक- कारक चिन्हों का ज्ञान एवं विभक्ति में प्रयोग कर्ताकारक, कर्मकारक, करण कारक सम्प्रदान कारक, अपादान कारक, सम्बन्ध कारक, अधिकरण कारक, सम्बोधन कारक।

क्रिया- क्रिया का ज्ञान कर लकारों में प्रयोग।

धातु - भू (भव्) लिख् ,हस्, पा (पिब्) नी (नय्)।

लकार - लट्, लङ् एवं लृट् लकार का प्रयोग।

वचन - एक वचन, द्विवचन, बहुवचन।

लिङ्ग - पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिंङ्ग।

पुरुष - प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष, उत्तम पुरुष।

अव्यय - अधुना, श्वः, अधः, पश्चात्, उपरि, ततः, यतः, कुतः, सर्वतः, पुरतः, पुरः, यदा, कदा, तदा, कथम्, अतः, कुत्र आदि ।

अनुक्रमणिका

PCAFKA

क्र.	पाठ का नाम		पृष्ठ क्रमांक
	स्तुतिः		1
1.	संवादः	संवादः पाठः	2
2.	गावोविश्वस्य मातरः	गद्यम्	11
3.	राष्ट्रध्वजः	गद्यम् (राष्ट्रीय पाठः) संवादः	13
4.	मम परिवारः	गद्यम् (पारिवारिक पाठः)	15
5.	प्रश्नोत्तरम्	गद्यम् (संवादः पाठः)	17
6.	छत्तीसगढप्रदेशः	गद्यम् (छत्तीसगढ़ परिचय पाठः)	19
7.	बालकः ध्रुवः	पौराणिक कथा (गद्यपाठः)	21
8.	आधुनिकयुगस्य आविष्काराः	गद्यम्	24
9.	मेलापकः	(गद्यपाठः)	28
10.	बालगीतम्	बालगीतम् (पद्यम्)	30
11.	श्रृंङ्गिऋषेः नगरी	गद्यम् (श्रृंगीऋषिस्थलपाठः)	32
12.	अस्माकम् आहारः	गद्यम् (स्वास्थ्यपाठः)	33
13.	शोभनम् उपवनम्	गद्यम् (स्वास्थ्यपाठः)	37
14.	जवाहरलालनेहरुः	गद्यम् (महापुरुषपाठः)	40
15.	वर्षागीतम् (बालगीतम्)	पद्यम् (ऋतुपाठः)	42
16.	दीपावलिः	गद्यम्	45
17.	छत्तीसगढराज्यस्य धार्मिकस्थलानि	गद्यम्	48
18.	नीतिनवनीतम्	पद्यम् (श्लोकपाठः)	50
19.	सूक्तयः खण्ड (अ)	सूक्तयः	52
	जयतु छत्तीसगढप्रदेशः खण्ड (ब)	गीतम्	54
	परिशिष्ट-व्याकरणम्	''व्याकरणम्''	56

स्तुतिः

शुक्लां ब्रह्म-विचार-सार-परमामाद्यां जगद्व्यापिनीम्,
वीणापुस्तक- धारिणीमभयदां, जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्तेस्फाटिकमालिकां विदधतीं, पद्मासने संस्थिताम्,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं, बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥

अर्थ-

श्वेत वर्ण वाली, ब्रह्म विचार-सार रूपी परम तत्व से युक्त, आदिरूपा, संसार में व्याप्त रहने वाली, वीणा और पुस्तक धारण करने वाली, अभय प्रदान करने वाली, जड़ता (अज्ञानता) रूपी अंधकार को दूर करने वाली, हाथों में शुभ्र मणियों की माला धारण करने वाली, कमल रूपी आसन में विराजमान रहने वाली एवं बुद्धि प्रदान करने वाली उस परमेश्वरी भगवती देवी को (मैं) प्रणाम करता हूँ ।

शब्दार्थाः-

शुक्लाम्	=	श्वेतवर्ण	पद्मासने	=	कमल रूपी आसन में
सारपरमाद्याम्	=	(सार-परमाम् + आद्यां) सार रूपी परम तत्व से समन्वित	बुद्धिप्रदाम्	=	बुद्धि प्रदान करने वाली
			शारदाम्	=	सरस्वती देवी को
जगद्व्यापिनीम्	=	संसार में व्याप्त रहने वाली	जाड्यान्धकारापहाम्	=	जड़ता रूपी अन्धकार को दूर करने वाली
हस्तेस्फाटिक	=	हाथों में स्फटिक			
मालिकाम्	=	माला	संस्थिताम्	=	विराजमान रहने वाली

1. संवादः

1.1 हट्टवार्ताः (गीता गच्छति हट्टम्)

मोहनः - गीते ! त्वं कुत्र गच्छसि ?

गीता - मोहन ! अहं हट्टं प्रति गच्छामि ।

मोहनः - गीते ! किमर्थम् ?

गीता - मोहन ! शाकं फलं च क्रेतुम् । अधुना त्वं कुत्र गच्छसि ।

मोहनः - गीते ! अधुना अहं गृहं प्रति गच्छामि ।

शब्दार्थाः-

त्वम् = तुम

कुत्र = कहाँ

गच्छसि = जा रहे हो

हट्टं प्रति = बाजार की ओर

किमर्थम् = किसलिए

शाकम् = शाक

क्रेतुम् = खरीदने के लिए

अधुना = अब

गच्छामि = जाता हूँ

1.2 छात्रालापः

वासुदेवः - भोः मित्र ! त्वं कस्यां कक्षायां पठसि ?

सुरेशः - मित्र ! अहं षष्ठ्यां कक्षायां पठामि । त्वं कस्यां कक्षायां पठसि ?

वासुदेवः - अहं सप्तम्यां कक्षायां पठामि ।

सुरेशः - तव कक्षायाः आचार्यस्य किं नाम अस्ति ।

वासुदेवः - मम कक्षायाः आचार्यस्य नाम ज्ञानानन्दः अस्ति । तव कक्षायाः आचार्यस्य नाम?

सुरेशः - मम कक्षायाः आचार्यस्य नाम परमानन्दः अस्ति ।

वासुदेवः - तव कक्षायां कति छात्राः पठन्ति ?

सुरेशः - मम कक्षायां चत्वारिंशत् छात्राः पठन्ति । तव कक्षायाम् च ?

वासुदेवः - मम कक्षायां पञ्चाशत् छात्राः पठन्ति ।

शब्दार्थाः -

कस्यां कक्षायाम् = किस कक्षा में, पठामि = पढ़ता हूँ, पठसि = पढ़ते हो, सप्तम्यां कक्षायाम् = सातवीं कक्षा में, कक्षायाः आचार्यस्य = कक्षा आचार्य का, कति = कितना, पठन्ति = पढ़ते हैं, चत्वारिंशत् = चालीस, पञ्चाशत् = पचास, पठन्ति = पढ़ते हैं ।

1.3 परिजनसंवादः

शीला - सखि ! तव किं नाम अस्ति ?
विमला - मम नाम विमला अस्ति ।
सखि ! तव किं नाम अस्ति ?
सुशीला - मम नाम सुशीला अस्ति ।
विमला - त्वं कुत्र वससि ?
सुशीला - अहं रायपुर आख्ये नगरे वसामि । त्वं च ?
विमला - अहं बिलासपुर आख्ये नगरे वसामि ।
सुशीला - तव पितुः किं नाम अस्ति ?
विमला - मम पितुः नाम श्री सुशीलकुमारः अस्ति ।
तव पितुः नाम ?
सुशीला - मम पितुः नाम चन्द्रकुमारः अस्ति ।
विमला - तव पिता किं कार्यं करोति ?
सुशीला - मम पिता कृषिकार्यं करोति । तव पिता ?
विमला - मम पिता अध्यापकः अस्ति ।
सुशीला - मम एका अग्रजा अस्ति । तव ?
विमला - मम द्वौ अनुजौ स्तः । अग्रजा न अस्ति ।
सुशीला - तव माता कीदृशी अस्ति ?
विमला - मम माता अति सरला अस्ति । तव माता ?
सुशीला - मम मातुः स्वभावः सरलः मधुरः च अस्ति ।

शब्दार्थाः

वससि = रहते हो, आख्ये = नामक, वसामि = रहता हूँ, तव पितुः = तुम्हारे पिता का, मम पितुः = मेरे पिता का, करोति = करते है, अग्रजा = बड़ी बहन, द्वौ अनुजौ स्तः = दो भाई हैं, कीदृशी = कैसी, मम माता = मेरी माता, तव माता = तुम्हारी माता

1.4 मनोहरम् उद्यानम्

गोपालः - कृष्ण ! त्वं प्रातः काले कुत्र गच्छसि ?

कृष्णः - गोपाल ! अहं प्रातः काले उद्यानं प्रति गच्छामि ।

गोपालः - कृष्ण ! उद्याने कति वृक्षाः सन्ति ?

कृष्णः - गोपाल ! उद्याने अनेके वृक्षाः सन्ति ।

गोपालः - कृष्ण ! केषाञ्चित् वृक्षाणां नामानि वद ।

कृष्णः - गोपाल ! अशोकवृक्षाः, वटवृक्षाः,
निम्बवृक्षाः इत्यादयः बहवः वृक्षाः सन्ति।

गोपालः - कृष्ण ! त्वम् उपवने कथम् अनुभवसि ?

कृष्णः - गोपाल ! अहम् उपवने मनोहरम् अनुभवामि ।

शब्दार्थाः

त्वम् = तुम

कुत्र = कहाँ

उद्यानं प्रति = उद्यान की ओर

बहवः = बहुत

केषाञ्चित् वृक्षाणाम् = कुछ वृक्षों के

नामानि = नामों को

कथम् = कैसे

अनुभवसि = अनुभव करते हो

मनोहरम् = सुन्दर

अनुभवामि = अनुभव करता हूँ ।

1.5 बुभुक्षिता लोमशा

पल्लवी - पूजे ! अहम् अद्य एकां लोमशाम् अपश्यम् ।

पूजा - पल्लवि ! त्वं तां लोमशां कुत्र अपश्यः ?

पल्लवी - पूजे ! अहं वने अपश्यम् ।

पूजा - पल्लवि ! सा लोमशा अति बुभुक्षिता आसीत् ।

पल्लवी - पूजे ! सा लोमशांक्षुधाशान्त्यर्थं वृक्षस्य उपरि भागे द्राक्षायाः फलानि दृष्ट्वा उत्पतति।

पूजा - पल्लवि ! परन्तु द्राक्षायाः फलानि अति उपरि आसन् ।

पल्लवी - पूजे ! सा लोमशा पुनः पुनः उत्पतति । परं द्राक्षायाः फलानि न प्राप्नोत् ।

पूजा - पल्लवि ! सा लोमशा कथयति- अहं द्राक्षायाः फलानि न खादामि । द्राक्षायाः फलानि अम्लानि सन्ति ।

शब्दार्थाः

एकां लोमशाम् = एक लोमड़ी को	अपश्यम् = देखा
बुभुक्षिता = भूखी	द्राक्षायाः फलानि = अंगूर के फल
उपरि = ऊपर में	आसन् = थे
उत्पतति = उछलती है	कथयति = कहती है
अम्लानि = खट्टे	सन्ति = हैं।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित संवादों को पढ़िए-

मोहनः - गीते ! त्वं कुत्र गच्छसि ?

गीता - मोहन ! अहं हट्टं प्रति गच्छामि ।

मोहनः - गीते ! किमर्थम् ?

गीता - मोहन ! शाकं फलं च क्रेतुम् । अधुना त्वं कुत्र गच्छसि ?

मोहनः - गीते ! अधुना अहं गृहं प्रति गच्छामि ।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

मोहनः - गीते ! त्वं कुत्र गच्छसि ।

गीता - मोहन ! ....

मोहनः - गीते ! किमर्थम् ।

गीता - मोहन ! ....

मोहनः - गीते ! अधुना अहं गृहं प्रति गच्छामि ।

(ख) निम्नलिखित संवादों को पढ़िए-

गोपालः - कृष्ण ! त्वं प्रातः काले कुत्र गच्छसि ?

कृष्णः - गोपाल ! अहं प्रातः काले उद्यानं प्रति गच्छामि।

गोपालः - कृष्ण ! उद्याने कति वृक्षाः सन्ति ।

कृष्णः - गोपाल ! उद्याने अनेकाः वृक्षाः सन्ति ।

गोपालः - कृष्ण ! केषाञ्चित् वृक्षाणां नामानि वद ।

कृष्णः - गोपाल ! अशोकवृक्षाः, वटवृक्षाः, निम्बवृक्षाः इत्यादयः बहवः वृक्षाः सन्ति ।

गोपालः - कृष्ण ! त्वम् उपवने कथम् अनुभवसि ?

कृष्णः - गोपाल ! अहम् उपवने मनोहरम् अनुभवामि ।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

गोपालः - कृष्ण ! त्वं प्रातः काले कुत्र गच्छसि ?

कृष्णः - गोपाल ! ....

गोपालः - कृष्ण ! उद्याने कति वृक्षाः सन्ति ?

कृष्णः - गोपाल ! ....

गोपालः - कृष्ण ! केषाञ्चित् वृक्षाणां नामानि वद ।

कृष्णः - गोपाल ! ....

गोपालः - कृष्ण ! त्वम् उपवने कथम् अनुभवसि ।

कृष्णः - गोपाल ! ....

(ग) निम्नलिखित संवादों को पढ़िए-

पल्लवी - पूजे ! अहम् अद्य एकां लोमशाम् अपश्यम् ।

पूजा - पल्लवि ! त्वं तां लोमशां कुत्र अपश्यः ।

पल्लवी - पूजे ! अहं वने अपश्यम् ।

पूजा - पल्लवि ! सा लोमशा अति बुभुक्षिता आसीत् ।

पल्लवी - पूजे ! सा लोमशा क्षुधाशान्त्यर्थं वृक्षस्य उपरि भागे द्राक्षायाः फलानि दृष्ट्वा उत्पतति ।

पूजा - पल्लवि ! परन्तु द्राक्षायाः फलानि अति उपरि आसन् ।

पल्लवी - पूजे ! सा लोमशा पुनश्च उत्पतति । परं द्राक्षायाः फलानि न प्राप्नोत् ।

पूजा - पल्लवि ! सा लोमशा कथयति- अहं द्राक्षायाः फलानि न खादामि । द्राक्षायाः फलानि अम्लानि सन्ति।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

पल्लवी - पूजे ! अहम् अद्य एकां लोमशाम् अपश्यम् ।

पूजा - पल्लवि ! ....

पल्लवी - पूजे ! अहं वने अपश्यम् ।

पूजा - पल्लवि ! ....

पल्लवी - पूजे ! सा लोमशा क्षुधाशान्त्यर्थं वृक्षस्य उपरि भागे द्राक्षायाः फलानि दृष्ट्वा उत्पतति ।

पूजा - पल्लवि ! ....

पल्लवी - पूजे ! सा लोमशा पुनश्च उत्पतति । परं द्राक्षायाः फलानि न प्राप्नोत् ।

पूजा - पल्लवि ! ....

अभ्यासः ''मोहन'' अकारान्त पुल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	कारकादि
प्रथमा	मोहनः	मोहनौ	मोहनाः	कर्त्ता
द्वितीया	मोहनम्	मोहनौ	मोहनान्	कर्म
तृतीया	मोहनेन	मोहनाभ्याम्	मोहनैः	करण
चतुर्थी	मोहनाय	मोहनाभ्याम्	मोहनेभ्यः	सम्प्रदान
पञ्चमी	मोहनात्	मोहनाभ्याम्	मोहनेभ्यः	अपादान
षष्ठी	मोहनस्य	मोहनयोः	मोहनानाम्	सम्बन्ध
सप्तमी	मोहने	मोहनयोः	मोहनेषु	अधिकरण
सम्बोधन	हे मोहन!	हे मोहनौ !	हे मोहनाः !	सम्बोधन

हिन्दी रूप	-	संस्कृत रूप	-	कारक
राम ने	-	रामः	-	कर्त्ता
राम को, के द्वारा	-	रामम्	-	कर्म
राम से	-	रामेण	-	करण
राम के लिए	-	रामाय	-	सम्प्रदान
राम से	-	रामात्	-	अपादान
राम का	-	रामस्य	-	सम्बन्ध
राम में	-	रामे	-	अधिकरण
हे राम	-	हे राम	-	सम्बोधन

उपर्युक्त विभक्तियों को क्रमशः प्रथमा, द्वितीया, तृतीया आदि नामों से जाना जाता है । इससे कारक आदि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है । संस्कृत में एकवचन, द्विवचन व बहुवचन का प्रयोग एक, दो, तीन एवं तीन से अधिक के लिए प्रयोग होते हैं ।

1. कारकों में सम्बन्ध और सम्बोधन कारक नहीं कहे जाते । चूंकि कारक के लिए क्रिया का सम्बन्ध कर्त्ता से होना चाहिए । अतः कहा गया है ''क्रिया जनकं कारकम्'' कारक क्रिया को उत्पन्न करता है ।
2. तृतीया करण कारक में णत्व विधान के अनुसार 'न' का 'ण' होता है जैसे रामेन न होकर रामेण होता है। इसी तरह षष्ठी बहुवचन में रामानाम् के स्थान पर रामाणाम् होता है । अन्य अकारान्त बालक का बालकेन, सोहन का सोहनेन होगा ।
3. ऊपर लिखे कारकों पर विचार किया जाय तो विविधता के बीच बहुत कुछ समानता है ।
   - (अ) कर्त्ता और सम्बोधन में द्विवचन और बहुवचन के रूप
   - (ब) कर्त्ता और कर्म में
   - (स) करण, सम्प्रदान और अपादान में ।
   - (द) सम्बन्ध और अधिकरण में द्विवचन के रूप

   निम्नांकित शब्दों के रूप ''मोहन'' के समान चलेंगें-

   राम, श्याम, बालक, देव, सोहन, गजानन, कृष्ण, छात्र, अश्व, मृग, शुक, गज आदि ।

PCJBLX

PCR6PH

2. गावो विश्वस्य मातरः

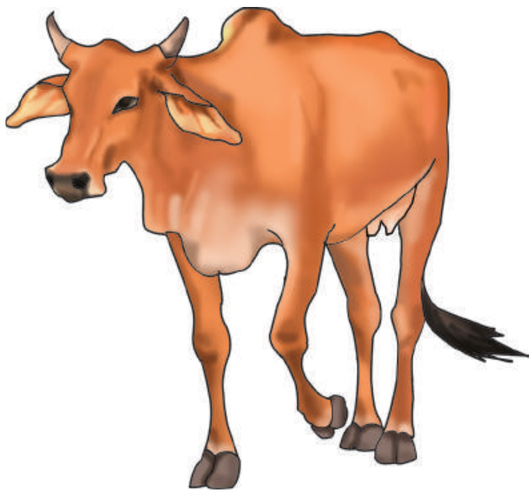

गौः न केवलं भारतस्य अपितु विश्वस्य माता अस्ति । सर्वेषु पशुषु गौः एका अहिंसका बुद्धिमती स्नेहकारिणी पारिवारिका पशुः अस्ति । माता इव सा अस्माकं जीवनं रक्षितुं समर्था अस्ति । यथा माता दुखं सोड्ढ्वा अपि पुत्रं रक्षति, लालयति, पालयति च, तथैव गौः शस्यानि बुषं भुक्त्वा शीतातपं वर्षां च सोड्ढ्वा अस्मभ्यं दुग्धं ददाति । तस्याः दुग्धं सर्वेषां पशुनां दुग्धात् श्रेष्ठतरं, सुपाच्यं, स्फूर्तिदायकं, मेधावर्धकं च भवति । दुग्धात् परिवर्तितं दधि, तक्रं, घृतं च स्वास्थाय विशिष्टं लाभप्रदं भवति । तक्रेण घृतेन च प्राणरक्षकाः अनेकाः औषधयः निर्मिताः भवन्ति । गोः मूत्रं नेत्रयोः अपूर्वा औषधिः, अनेकासु औषधिषु अपि प्रयुक्तं भवति । गोमयेन वयं स्वगृहान् पवित्रीकुर्मः गोमयस्य स्पर्शेन अनेकान् मानसिकरक्तचापसम्बन्धि रोगान् शमयति। अनेन सिद्धयति यत् गौः अनेकेन प्रकारेण अस्माकं मातृवत् रक्षां करोति । गोवत्साः अस्माकं कृषिप्रधाने देशे कृषकानाम् अपूर्वाः सहायकाः सन्ति । ते कृषकैः सह न केवलं कृषिकार्यं कुर्वन्ति अपितु शकटम् अपि वहन्ति। गोमयं गोमूत्रं च श्रेष्ठतमं कृषि-पोषक तत्वं खाद इति संज्ञकम् अस्ति। यदि गोः सम्पूर्णभावेन रक्षा स्यात् तदा निश्चयमेव समस्तं विश्वं दुग्धेन, घृतेन, अन्नेन च जनान् पालयितुं समर्थो भविष्यति । अतः इयम् उक्तिः सत्या यत् ''गावो विश्वस्य मातरः'' इति ।

शब्दार्थाः -

सोड्ढ्वा	=	सहकर
शस्यानि	=	घास
बुषम्	=	भूसा
गोमयम्	=	गोबर
तक्रम्	=	मट्ठा
कृषि	=	खेती
शकटम्	=	बैलगाड़ी

वहन्ति = ढोते हैं
रक्षितुम् = रक्षा करने के लिए
अपितु = और भी

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए -

क. गौः कीदृशः पशुः अस्ति ?

ख. गोः दुग्धं कियत् लाभकारकं भवति ?

ग. गोमयस्य उपयोगः केषु केषु कार्येषु भवति ?

घ. कथम् गौः विश्वस्य माता अस्ति ?

ङ. गोवत्सानां प्रयोगः केषु कार्येषु वयं कुर्मः ?

2. सह = साथ के योग में तृतीय विभक्ति का प्रयोग होता है अर्थात् जिसके साथ ''सह'' का प्रयोग हो उस शब्द में तृतीया के एक वचन, द्वि वचन, बहु वचन का प्रयोग करना चाहिए। जैसे कृषकैः 'सह' में कृषक शब्द में तृतीया का बहुवचन हो जाता है। इसी आधार पर निम्न वाक्यों का संस्कृत अनुवाद कीजिए -

क. राम के साथ लक्ष्मण भी वन को जाते हैं।

ख. कृष्ण के साथ गोप खेलते हैं।

ग. किसानों के साथ बैल (वृषभ) भी काम करते हैं।

PCT7NK

PD12R5

3. 'राष्ट्रध्वजः'

प्रमोदः - मित्र सुबोध ! चित्रे किं दृश्यते ?

सुबोधः - मित्र प्रमोद ! चित्रे एको ध्वजो दृश्यते ।

प्रमोदः - मित्र ! अयं कस्य देशस्य ध्वजः अस्ति ?

सुबोधः - मित्र ! अयम् अस्माकं राष्ट्रस्य भारतस्य ध्वजः अस्ति । अतः राष्ट्रध्वजः कथ्यते।

प्रमोदः - मित्र सुबोध ! ज्ञातं मया । किमयमेव राष्ट्रध्वजः अस्माकं देशे 'तिरंगा' इति नाम्ना प्रसिद्धिं प्राप्तः ?

सुबोधः - अथ किं मित्र प्रमोद ! अस्मिन् ध्वजे त्रयोरंगाः वर्णाः वा सन्ति । अतः 'तिरंगा' कथ्यते ।

प्रमोदः - मित्र ! अत्र त्रिपट्टिकाः दृश्यते ! तासु त्रीन् वर्णान् पश्यामि । उपरितनः पिण्याकवर्णः (केसरवर्णः) दृश्यते। अयं कस्य भावस्य प्रतीकः वर्तते ।

सुबोधः - मित्र ! पिण्याकवर्णः (केसरवर्णः) त्यागस्य, जागरणस्य, शौर्यस्य च प्रतीको अस्ति ।

प्रमोदः - मित्र ! श्वेतपट्टिकायाः वर्णः कं भावं द्योतयति ।

सुबोधः - मध्यस्थितायाः श्वेतपट्टिकायाः वर्णः सत्यं निर्मलतां च द्योतयति ।

प्रमोदः - मित्र ! अधः स्थितायाः हरितपट्टिकायाः वर्णः कं भावं प्रदर्शयति ?

सुबोधः - मित्र ! अधो भागे विद्यमानायाः हरितपट्टिकायाः वर्णः जीवनसमृद्धिं सुखं च प्रदर्शयति ।

प्रमोदः - मित्र ! अहं श्वेतपट्टिकायाम् एकं चक्रमपि पश्यामि । किञ्च द्योतयति?

सुबोधः - मित्र ! इदम् अशोकचक्रमस्ति एतत् चक्रं गतिशीलतां द्योतयति । राष्ट्रीयपर्वसु राष्ट्रध्वजारोहणं क्रियते । अस्माकं प्रधानमंत्री प्रत्येकमगस्त मासस्य पञ्चदशतारिकायां देहल्याः रक्तदुर्गात् राष्ट्रध्वजोत्तोलनं करोति ।

प्रमोदः - मित्र सुबोध ! अवगतं राष्ट्रध्वजस्य महत्वम् । अयं राष्ट्रध्वजोऽस्माकं सर्वेषां भारतीयानाम् आदरभाजनम् । अयं सर्वेषां भारतीयानां वन्दनीयः ।

सुबोध प्रमोदः च राष्ट्रध्वजं श्रद्धया नमतः स्वगृहम् च गच्छतः ।

शब्दार्थाः

PD33Q8

द्योतयति	-	सूचित करता है ।
पर्वसु	-	उत्सवों में ।
राष्ट्रध्वजारोहणम्	-	राष्ट्रध्वज का फहराना ।
रक्तदुर्गात्	-	लाल किले से ।
उत्तोलनम्	-	फहराना ।

अभ्यासः

1. संस्कृत में उत्तर दीजिए ।

क. चित्रे किं दृश्यते?

ख. ध्वजे कतिवर्णाः सन्ति ?

ग. श्वेतपट्टिकायाः वर्णः कं भावं द्योतयति ?

घ. अशोकचक्रं किं द्योतयति ?

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

क. राष्ट्रध्वजः .... इति नाम्ना प्रसिद्धम् ।

ख. राष्ट्रध्वजस्य उपरितनः .... वर्णः दृश्यते ।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए ।

क. मैं श्वेत पट्टिका में एक चक्र भी देखता हूँ ।

ख. राष्ट्रध्वज राष्ट्र की एकता का प्रतीक है ।

ग. दोनों राष्ट्रध्वज को प्रणाम करते हैं ।

4. विभक्ति-निर्देश कीजिए ।

अस्माकम्, राष्ट्रस्य, रक्तदुर्गात्, सर्वे ।

5. सन्धि विच्छेद कीजिए ।

अथवेयं, ध्वजोत्तोलनम्, ध्वजोऽस्माकम् ।

PDBYRV

4. मम परिवारः

एकस्मिन् ग्रामे जगत्पालो नाम एकः सज्जनो वसतिस्म। तस्य परिवारः सीमित-परिवारः अस्ति । तस्य पत्नी कला अस्ति । जगत्पालः सप्तत्रिंशद्वर्षीयः कला द्वात्रिंशद्वर्षीया च स्तः । जगत्पालस्य हृदयमतीवोदारं, कलायाः स्वभावश्चातीव मधुरो विद्यते । तौ दम्पती निवसतः।

तयोः द्वे सन्तती स्तः । एकस्तनयः एका तनया च। तनयस्य नाम सुरेशः तनयाश्च नाम प्रतिभा अस्ति । सुरेशः एकादशवर्षीयः प्रतिभा सप्तवर्षीया च । सुरेशः सप्तम्-कक्षायां पठति प्रतिभा तृतीय-कक्षायां च ।

आम्रनिम्बकादिवृक्षैः आच्छादितं जगतपालस्य गृहमत्यन्तं रमणीयं वर्तते । जगत्पालः एकः योग्यः कुशल-कृषकः । सः सर्वदा कृषि कर्मणि व्यापृतः स्वकर्त्तव्यं पालयति । सः परिश्रमं कृत्वा स्वक्षेत्रे पर्याप्तमन्नं शाकं फलं च उत्पादयति । तस्य गृहे एका श्वेत-वर्णा धेनुः वर्तते । सा दुग्धं ददाति ।

सुरेशः प्रतिभा च स्वास्थ्यप्रदं पुष्टिप्रदं च भोजनं कुरुतः । तयोः आहारे शाकस्य फलस्य चाधिक्यं वर्तते । तौ भ्रातृभगिन्यौ यथेच्छं दुग्धं पिवतः । स्वच्छानि वस्त्राणि परिधाय प्रसन्नौ स्वस्थौ तौ मातरं पितरं च प्रणम्य पठनाय स्व विद्यालयं प्रति गच्छतः ।

कला एका स्वस्था आदर्शभूता च गृहिणी अस्ति । पति जगत्पालोऽपि स्वपत्नीं कलां बहु मन्यते । अनेन कारणेन परस्परस्नेह-सौहार्द्रबध्दः अयं लघुपरिवारः एकः आदर्शपरिवारः । आहारस्य वस्त्रस्य गृहस्य च व्यवस्था लघुपरिवारे एव समुचितरूपेण भवति । लघुपरिवारेणैव समाजस्य राष्ट्रस्य च कल्याणं भवितुम् अर्हति ।

शब्दार्थाः

एकस्मिन् ग्रामे	-	एक गांव में ।	दम्पती	-	पति-पत्नी ।
वसति	-	रहता है ।	निम्ब	-	नीम का वृक्ष ।
जगत्पालस्य	-	जगतपाल का ।	तनयः	-	पुत्र
कक्षायाम्	-	कक्षा में ।	तनया	-	पुत्री ।
आच्छादितम्	-	ढका हुआ ।	शाकम्	-	सब्जी ।
कर्मणि	-	कर्म में ।	प्रणम्य	-	प्रणाम करके ।
व्यापृतः	-	लगा हुआ, तत्पर ।	अनेन-कारणेन	-	इस कारण से ।
तस्य गृहे	-	उसके घर में ।	अर्हति	-	योग्य है ।

अभ्यासः

1. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में दीजिए ।

क. जगत्पालस्य हृदयं कीदृशम् अस्ति ?

ख. प्रतिभा कस्यां कक्षायां पठति ?

ग. कीदृशः परिवारः सुखीपरिवारः ?

घ. कला कीदृशी गृहिणी आसीत् ?

2. खाली स्थान पूर्ण कीजिए -

क. तयोः आहारे .... चाधिक्यं वर्तते ।

ख. जगत्पालस्य गृहम् अत्यन्तम् .... वर्तते ।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए ।

क. जगत्पाल का हृदय उदार है ।

ख. उसकी पत्नी का नाम क्या है ?

ग. उसके पुत्र का नाम सुरेश है ।

घ. सुरेश किस कक्षा में पढ़ता है ?

ङ. यह छोटा परिवार है ।

PDKUTI

4. निम्न का संधि विच्छेद कीजिए ।

क. तनयाश्च

ख. जगत्पालोऽपि

ग. एकस्तनयः

घ. परिवारेणैव

PDUQV6

5. प्रश्नोत्तरम्

(गुरु-शिष्यसंवादः)

शिष्याः - नमस्ते गुरुदेव !

गुरुः - नमः शिष्येभ्यः ! मोहन, किं. त्वं पश्यसि ? अद्य अन्धकारः अस्ति ।

मोहनः - गुरुदेव ! किं कारणं अन्धकारस्य ?

गुरुः - सूर्यस्य न दर्शनं एव अन्धकारस्य कारणम् ।

गुरुः - सूर्यस्य नामानि- आदित्यः, रविः, भास्करः, दिनकरः, दिनपतिः, दिवाकरः, प्रभृतीनि सन्ति ।

छात्राः - सूर्यः किं करोति ?

गुरुः - सूर्यः प्रातः काले उदयते सायङ्काले च अस्तं गच्छति ।

छात्राः - सूर्य इति शब्दस्य कोऽर्थः ?

गुरुः - सूर्यः आकाशे सरति इति कारणात् सूर्यः । अत्र 'सृ' धातौ क्यप् प्रत्ययः । सूर्यस्य अन्याऽपि परिभाषा भवितुं अर्हति । सुवति अर्थात् लोकं कर्मणि प्रेरयति इति सूर्यः ।

छात्राः - सूर्यः किं किं करोति ?

गुरुः - प्रकाशं ददाति, अन्धकारं दूरीकरोति, रोगकीटाणुसमूहं नाशयति, सर्वंजीवं जीवयति, बुद्धिं वर्धयति, ज्ञानं ददाति, बलं वर्धयति, शक्तिं सञ्चारयति, अतः अस्य दैवीकरणं कृतम् । सूर्यस्य रश्मिषु सप्त रङ्गाः परिलक्ष्यन्ते ।

छात्राः - पुराणे सूर्यः रामस्य कुलदेवः अस्ति ?

गुरुः - सत्यं वदसि, रामः आज्ञाकारी अस्ति । सः आज्ञां पालयितुं वेदं पठति ।
मारीचं मारयति, रावणं हन्ति इति ।

छात्राः - गुरुदेव ! रामस्य स्वरूपं वर्णय ।

गुरुः - मस्तके मुकुटं धारयति । सः ललाटे चन्दनं धारयति । स्कन्धे यज्ञोपवीतं, शरासनं च धारयति । पृष्ठे बाण-सहितं तूणीरं धारयति इति ।

शब्दार्थाः

पश्यसि	-	देखते हो ।	प्रेरयति	-	ले जाता है ।
सूर्यस्य	-	सूर्य का ।	जीवयति	-	जीवित रखता है ।
कति	-	कितने ।	वर्धयति	-	बढ़ाता है ।
उदयते	-	उगता है ।	सञ्चारयति	-	संचार करता है ।
सरति (चलति)	-	चलता है ।	कुलदेवः	-	कुल देवता ।
प्रभृतीनि	-	इत्यादि ।	वर्णय	-	वर्णन करो ।
प्रातःकाले	-	सुबह ।	धारयति	-	धारण करता है ।
भवितुम् अर्हति	-	होता है ।			

अभ्यासः

प्रश्न 1- निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ?

PE4LHT

अ. पाठ में आये क्रियापदों को लिखकर संस्कृत में स्वतंत्र वाक्य बनाइए ।

ब. पाठ के संज्ञा पदों को लिखकर विभक्ति के अनुसार वर्गीकरण कीजिए ।

स. सूर्य के पाँच पर्यायवाची शब्द लिखिए ।

द. सूर्य को अपनी मातृभाषा में क्या-क्या कहते हैं लिखिए ।

ई. क्रियापदों को अपनी मातृभाषा में लिखिए ।

फ. क्रियापदों से धातु एवं प्रत्यय अलग कीजिये ।

प्रश्न 2- रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए ।

अ. सूर्यः ------- ददाति ।

ब. सः वेदं ------------ ।

स. ------------ रावणं हन्ति ।

द. मस्तके ---------- धारयति ।

प्रश्न 3- संस्कृत में अनुवाद कीजिए ।

अ. गोपाल पुस्तक देता है ।

ब. सूर्य प्रकाश देता है ।

स. राम वेद पढ़ता है ।

द. सीता घर जाती है ।

PEDHYG

6. छत्तीसगढप्रदेशः

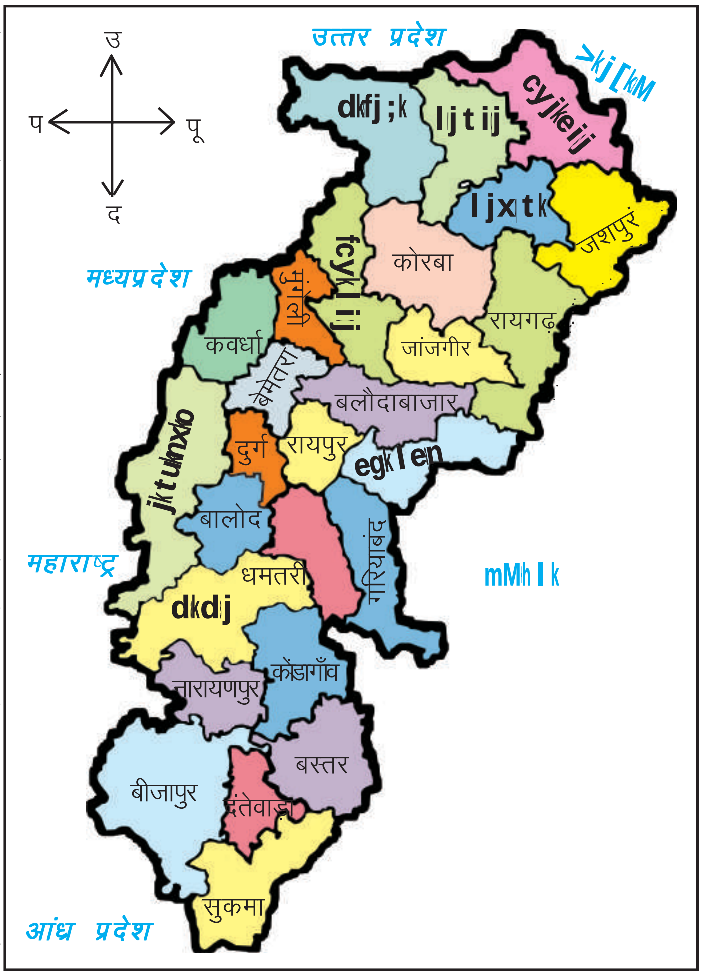

भारतः अस्माकं देशः अस्ति। भारतवर्षस्य मध्यदक्षिणभागे छत्तीसगढप्रदेशः विराजते। छत्तीसगढप्रदेशस्य प्रमुखनदी महानदी अस्ति। सिहावा पर्वतात् उद्भूता महानदी छत्तीसगढप्रदेशस्य पवित्रतमा नदी अस्ति। यस्याः सहायक नदीषु शिवनाथ, हसदो, ईब, पैरी, जोंक, केलो, उदन्ती प्रभृतयः नद्यः अनवरतं छत्तीसगढप्रदेशस्य भूमिमुर्वरां विदधति । दक्षिणे गोदावरी नदी प्रवहति। यस्याः सहायिका इन्द्रावती नदी बस्तर मण्डलान्तर्गतं पश्चिम दिशायां प्रवहति। छत्तीसगढप्रदेशस्य राजधानी रायपुरनगरम् अस्ति।

छत्तीसगढप्रदेशः 2000 तमे खीस्ताब्दे नवम्बर मासस्य प्रथम दिनाङ्के सुघटितः । प्रदेशस्य राजिमनगरं महत्वपूर्णं धार्मिकस्थलम् अभिधीयते। यत्र महानदी-पैरी-सोढूर प्रभृतीनां त्रिसृणां नदीनां संगम स्थली छत्तीसगढप्रदेशस्य 'गङ्गा' इति उच्यते। ऐतिहासिकस्थलं 'सिरपुरम्' सोमवंशीयराजानां राजधानी आसीत्। तत्र आनन्दपुरी बिहारभग्नः बौद्धविहारः चापि सन्ति। प्रदेशस्य कवर्धाक्षेत्रे भोरमदेवः छत्तीसगढप्रदेशस्य खजुराहो नाम्ना विख्यातः। छत्तीसगढप्रदेशस्य राजस्व-सम्भागः बिलासपुरमस्ति। बिलासपुर मण्डलान्तर्गतं रतनपुरम् इति ऐतिहासिकस्थलमस्ति । पुरा कलचुरिराजानां राजधानी आसीत्। तत्र महामाया मन्दिरं सुविख्यातम्। सरगुजा -जिलान्तर्गतं रामगढक्षेत्रस्य 'पहाड़ी' स्थानं महाकविकालिदासस्य मेघदूतकाव्यस्य रचनास्थली अभिधीयते। दन्तेवाड़ाजिलायां दन्तेवाड़ा दन्तेश्वरी देव्याः इति नाम्ना प्रसिद्धा।

अस्मिन् प्रदेशे प्रभूतमन्नमुत्पन्नं भवति। अतः छत्तीसगढप्रदेशः 'धान का कटोरा' इति उच्यते। छत्तीसगढप्रदेशः अरण्यानां प्रदेशोऽपि अस्ति। वनेभ्यः वयं काष्ठानि-फलानि औषधयः च प्राप्नुमः। वनेषु खगाः मृगाः व्याघ्राः च निवसन्ति। अस्मिन् प्रदेशे बारनवापारा सीतानदी अभ्यारण्य, मैत्रीउद्यानं च ख्यातिलब्धानि उद्यानानि सन्ति। प्रदेशस्य बस्तरक्षेत्रे आदिवासिजनानां बाहुल्यं लक्ष्यते। ते जनाः वनेषु निर्भयं भूत्वा विचरन्ति। साम्प्रतं शासनम् एषाम् उन्नत्यै बहुयतता। प्रदेशस्य देवभोगः मैनपुरं च रत्नानां खनिभूमिः। इस्पात नगरी भिलाई लौहादयः खनिजाः उद्योगानां कृते आधारभूताः। एवं राष्ट्र जीवने छत्तीसगढप्रदेशः प्रियतरः। जयतु जयतु छत्तीसगढप्रदेशः।

शब्दार्थाः

विराजते	-	विद्यमान है ।
उद्भूता	-	उत्पन्न हुई ।
विदधति	-	बढ़ाते हैं ।
अभिधीयते	-	कहते हैं ।
तिसृणां नदीनाम्	-	तीनों नदियों का ।
प्रभूतम्	-	बहुत ।
प्राप्नुमः	-	प्राप्त करते हैं ।
साम्प्रतम्	-	अब ।
खनिभूमिः	-	खनिज भूमि।
लक्ष्यन्ते	-	दिखाई देते है ।

PEME14

अभ्यासः

1. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में दीजिए ।

क. छत्तीसगढप्रदेशः कुत्र विराजते ?

ख. अस्माकं प्रदेशस्य राजधानी का अस्ति ?

ग. छत्तीसगढप्रदेशस्य कस्मिन् भागे रत्नानि प्राप्नुवन्ति ?

घ. आदिवासिनः कुत्र विचरन्ति ?

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

क. छत्तीसगढप्रदेशस्य प्रमुखा नदी .... अस्ति?

ख. छत्तीसगढप्रदेशस्य कवर्धाक्षेत्रे ....छत्तीसगढप्रदेशस्य खजुराहो नाम्ना विख्यातः ।

ग. बस्तर जिलायां दन्तेवाड़ा .... नाम्ना प्रसिद्धा ।

घ. छत्तीसगढप्रदेशः .... इति उच्यते ।

3. सही जोड़ी बनाइए -

1.	भिलाई नगरम्	-	सिहावा
2.	छत्तीसगढ	-	सरगुजा
3.	महानदी	-	इस्पात
4.	रामगढ	-	रायपुर

PEWA2R

7. बालकः ध्रुवः

पुरा उत्तानपादः नाम एकः राजा आसीत् । तस्य द्वे पत्न्यौ स्तः-एका सुनीतिः अपरा च सुरुचिः । राज्ञी सुरुचिः राज्ञोऽतीव प्रियासीत् । उत्तमः नाम तस्याः पुत्रः आसीत् । सुनीतिः राजानं नातिप्रियासीत् तस्याः पुत्रः ध्रुवः आसीत् ।

एकस्मिन् दिने राजा सुरुचेः पुत्रम् उत्तमम् अङ्के निधाय स्नेहं कुर्वन्नासीत् । तस्मिन् समये सुनीतेः पुत्रः ध्रुवः पितुः अङ्के स्थातुमैच्छत्। तद् दृष्ट्वा विमाता सुरूचिः अब्रवीत् । वत्स ! त्वं राजसिंहासने आरोढुम् अयोग्यः असि यतः त्वम् अन्यस्त्रीगर्भात् उत्पन्नोऽसि। यदि त्वं राजसिंहासने आरोढुम् इच्छसि तर्हि भगवतः नारायणस्य आराधनां कुरु । मम कुक्षौ च आगत्य जन्म गृहाण ।

विमातुः मुखात् एतानि कटु वचनानि श्रुत्वा बालकः ध्रुवः उच्चस्वरेण रोदनमारभत । किन्तु राजा उत्तानपादः इदं सर्वं तूष्णीं भूत्वा पश्यन्नासीत् । अत्रान्तरे बालकः ध्रुवः रोदनं कुर्वन् मातुः सुनीतेः पार्श्वं गतः अवदत् च विमातुः कटु-व्यवहार विषये । पुत्रात् सुरुचेः कटुवचनमाकर्ण्य सुनीतिः संयमेन ध्रुवमब्रवीत् - वत्स ! धैर्यं शान्तिं च धारय । यद्यपि त्वं विमातुः आचरणेन प्रताडितोऽसि तथापि त्वं परार्थे कदापि अमङ्गलं कामनां मा कुरु । यः पुरुषः अन्यान् खिन्नं करोति सः तस्य फलं अवश्यमेव प्राप्नोति। अतः भौ वत्स ! त्वं विमातुः कटुसत्यं पालयन् भगवतः नारायणस्य चरणकमलयोः आराधनां कुरु । तपसा तव पूर्वजाः परां शान्तिम् अलभन्त ।

मातुरादेशेन ध्रुवः ईश-ध्यानं प्रति प्रेरणां गृहीत्वा स राजप्रासादं त्यक्त्वा च वनम् अगच्छत् । वने ध्रुवः घोरतपः अकरोत् । तस्य मन्त्रः आसीत् - 'ओम् नमो भगवते वासुदेवाय' ध्रुवस्य तपसा प्रसन्नो भूत्वा भगवान् विष्णुः तस्य समक्षं प्रकटीभूतः ईप्सितं वरं च प्रादात् ।

ध्रुवः स्वर्गलोके अचलं पदं प्राप्तवान् ।

शब्दार्थाः

अपरा	-	दूसरी	अतीव	-	बहुत
अङ्के	-	गोद में	निधाय	-	बैठाकर
स्थातुम् ऐच्छत्	-	बैठने की इच्छा किया	अब्रवीत्	-	बोली
वत्स	-	पुत्र	आरोढुम्	-	चढ़ने के लिए
यतः	-	क्योंकि	तर्हि	-	तो
कुक्षौ	-	कोख में	आगत्य	-	आ करके
गृहाण	-	ले लो	श्रुत्वा	-	सुनकर
पार्श्वे	-	पास में	आरभत	-	आरम्भ कर दिया
आकर्ण्य	-	सुनकर	तूष्णीं भूत्वा	-	चुप रह कर
कदापि	-	कभी भी	अत्रान्तरे	-	इसी बीच में
अन्यान्	-	दूसरों को	प्रताड़ितः	-	दुखी किया गया
खिन्न	-	दुःखी	परार्थे	-	दूसरे के हित के लिये
पराम्	-	श्रेष्ठ, उत्तम	प्राप्नोति	-	प्राप्त करता है
अलभन्त	-	प्राप्त किये	प्रादात्	-	दिया, प्रदान किया
प्रासादम्	-	महल	प्रकटीभूतः	-	प्रकट हुए (उपस्थित हुए)
त्यक्त्वा	-	छोड़कर	ईप्सितम्	-	इच्छित

अभ्यासः

1. अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए-

1. राज्ञः उत्तानपादस्य कति पत्न्यौ आस्ताम् ?
2. ध्रुवस्य मातुः किं नाम ?
3. ध्रुवस्य माता किं कर्तुम् आदिदेश ?
4. ध्रुवस्य विमातुः नाम किम् ?

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

1. सुनीतेः पुत्रः .... आसीत् ।
2. ध्रुवः तपस्यां कर्तुं .... अगच्छत् ।
3. वने .... तपः अकरोत् ।
4. रुदन् ध्रुवः मातुः सुनीतेः ....।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए -

1. उत्तानपाद एक राजा था ।
2. सुरुचि उनकी प्रिय रानी थी ।
3. ध्रुव भगवान का भक्त था ।
4. ध्रुव नारायण को प्रणाम करता है ।
5. ध्रुव ने अचल पद प्राप्त किया ।

PF664E

4. निम्नलिखित शब्दों से संस्कृत वाक्य बनाइए -

1. ध्रुवः	2. उत्तानपादः	3. सुरुचि
4. सुनीतिः	5. अब्रवीत्	6. अस्ति

PFF262

8. आधुनिकयुगस्य आविष्काराः

1. शीतलकं यन्त्रम्

अधुना विज्ञानेन अति उन्नतिः कृता । तेषु शीतलकं यन्त्रं प्रथममस्ति। जनाः अस्य महतीं आवश्यकतां प्रतिगृहम् अनुभवन्ति । ग्रीष्मकाले च अस्य महती उपयोगिता परिलक्ष्यते।

शीतलकयन्त्रम्

2. सङ्गणकयन्त्रम्

अस्मिन् युगे संगणकयन्त्रस्य उपयोगः सर्वेषु क्षेत्रेषु दृश्यते । अनेन यन्त्रेणक्रान्तिकारि परिवर्तनम् अभवत् । अद्य शिक्षाक्षेत्रे अस्य महती आवश्यकता वर्तते । देशविदेशानां समाचारम् इन्टरनेट माध्यमेन प्रेषयितुं समर्थः अयं सङ्गणकः। अधुना सङ्गणकस्य उपयोगिता वर्तते ।

सङ्गणकयन्त्रम्

3. वायुयानम्

एतद् वायुयानम् अस्ति । वायुयानं शीघ्रगामि भवति । अति द्रुतगत्याः गगने उड्डयति । जनाः अनेन वायुयानेन दूरस्थानपर्यन्तं गन्तुं शक्नुवन्ति ।

वायुयानम्

4. दूरदर्शनम्

सम्पर्कसाधनेषु दूरदर्शनम् अत्याधुनिकसाधनम् अस्ति । प्रतिदिनं वयं नूतनसमाचारं प्राप्नुमः । विविधविषयाणां सूचनां दूरदर्शनं सूचयति यथा - क्रीड़ा-शिक्षा-विज्ञान-कृषि-व्यवसायादीनां विषयाणां समाचारः शीघ्रमेव जनैः प्राप्तुं शक्यते ।

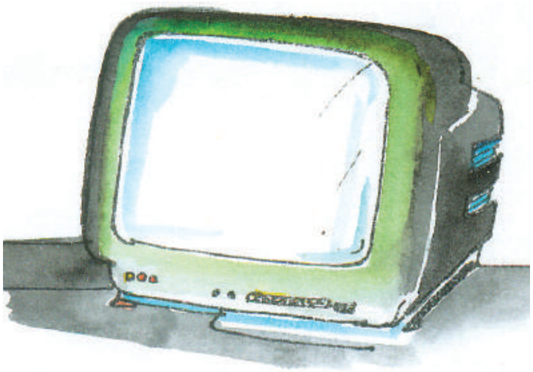

दूरदर्शनम्

5. रेडियो यन्त्रम्

रेडियो यन्त्रेण विविध समाचाराः भाषणानि गीतानि च श्रूयन्ते । अस्माभिः अनेन यन्त्रेण अनेके शैक्षिककार्यक्रमाः वैज्ञानिकप्रयोगाः च ज्ञायन्ते ।

रेडियो यन्त्रम्

7. चलितदूरभाषयन्त्रम्

एतद् आधुनिकं -चलित - दूरभाष-यन्त्रम् (मोबाईल) येन माध्यमेन कस्मिंश्चिदपि स्थाने विद्यमानाः जनाः स्वमित्रैः सह वार्तालापं कर्तुं शक्नुवन्ति । अस्य यन्त्रस्य ध्वनिः अतिमधुरा प्रतीयते । (जनाः) एतद् यन्त्रं कोटरिकायां स्थापयन्ति । कोटरिकारतः बहि निःसार्य कर्णस्थले आनीय जनैः स्वजनेन, स्वमित्रेण, स्वबन्धुना सह वार्तालापः क्रियते । अस्य यन्त्रस्य उपयोगिता अधुना सर्वेषु क्षेत्रेषु अनवरतं भवति ।

चलित दूरभाष यन्त्रम्

वयं अनेन यन्त्रमाध्यमेन लिखित-संदेशं-अभिनन्दन पत्रं च प्रेषयितुं शक्नुमः । बालक-बालिकाश्च क्रीडन्तः आनन्दमनुभवन्ति । एतद् यन्त्रम् इन्टरनेटमाध्यमेन अभिनन्दनपत्रं, शोकपत्रं, संदेशपत्रं अन्यंमहत्वपूर्ण समाचारं प्रेषयितुं समर्थम् । अधुना अस्य यन्त्रस्य अति उपयोगितास्ति । अतः एतद् यन्त्रंलोकप्रियम् अस्ति ।

शब्दार्थाः

अधुना	-	आजकल
प्रतिगृहम्	-	घर-घर में ।
अनुभवन्ति	-	अनुभव करते हैं ।
सङ्गणकयन्त्रम्	-	कम्प्यूटर यन्त्र ।
देशविदेशानाम्	-	देश विदेशों का ।
प्रेषयितुम्	-	भेजने के लिये ।
वायुयानम्	-	हवाई जहाज ।
गगने	-	आकाश में ।
उड्डयति	-	उड़ता है ।
शक्नुवन्ति	-	समर्थ होते हैं ।
प्राप्नुमः	-	प्राप्त करते हैं ।
सूचयति	-	सूचित करता है ।
ज्ञायन्ते	-	ज्ञात होते हैं ।
चलितदूरभाषयंत्रम्	-	चलित टेलीफोन (मोबाईल)
कोटरिका	-	जेब (पॉकेट)
निःसार्य	-	निकालकर
आनीय	-	लाकर
वार्तालापः	-	बातचीत
क्रियते	-	किया जाता है ।
अनवरतम्	-	लगातार ।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों का संस्कृत में उत्तर दीजिए ।

1. अधुना केन यन्त्रेण क्रान्तिकारिपरिवर्तनम् अभवत् ?
2. किं यानं गगने द्रुतगत्याः उड्डयति ?
3. दूरदर्शनं किं सूचयति ?
4. अस्माभिः रेडियोयन्त्रेण कानि-कानि श्रूयन्ते ?
5. कस्य यन्त्रस्य ध्वनिः मधुरा प्रतीयते ?

2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए ।

1. .... महतीं आवश्यकतां प्रतिगृहम् अनुभवन्ति ।
2. वायुयान् .... भवति ।
3. विविध विषयानां सूचनां .... सूचयति ।
4. रेडियो यन्त्रेण .... श्रूयते ।
5. चलित दूरभाष यन्त्रं .... स्थापयन्ति ।

3. युग्म बनाइए-

1. चलित दूरभाष यन्त्रम्	-	शीघ्रकार्ययन्त्रम्
2. सङ्गणक यन्त्रम्	-	दृश्य-श्रव्य यन्त्रम्
3. रेडियो यन्त्रम्	-	आकाशगामी यन्त्रम्
4. वायुयानम्	-	श्रवणम्
5. दूरदर्शनम्	-	श्रव्यभाषण यन्त्रम्

4. 'इदम्' पुल्लिङ्ग सर्वनाम शब्द की कारक रचना लिखिये।

5. 'भू' (भव्) धातु का लट्लकार परस्मैपद में रूप चलाइये ।

PFNX7P

PFXT9C

9. मेलापकः

अहमदः - मोहन ! अद्य तु तव वेशः अतीव सुन्दरः अस्ति । कथय, कथं नवीनानि वस्त्राणि धारयसि ?

मोहनः - अहमद ! किं त्वं न जानासि, यद् अद्य अस्माकं ग्रामे विजयदशम्याः मेलापकः अस्ति । अद्य अहं तत्र गच्छामि । ग्रामस्य अन्ये बालकः बालिकाः अपि तत्र गमिष्यन्ति । किं त्वं मया सह न चलिष्यसि ?

अहमदः - मोहन ! अयं तु महान् सुअवसरः अस्ति । वद तत्र किं भविष्यति ?

मोहनः - भ्रातः ! तत्र महान् जनसम्मर्दः भविष्यति । तत्र आवां विविधानि दृश्यानि द्रक्ष्यावः । रामरावणयोः युद्धस्य अभिनयः अपि तत्र भविष्यति ।

अहमदः - कीदृशं युद्धं सुस्पष्टं कथय ? किं तत्र रामलीला भविष्यति?

मोहनः - आम् तावत् त्वं तु जानासि एव । पुनः किं पृच्छसि ? अतः त्वम् अपि सज्जितः भव ।

अहमदः - क्षणं विरम, अहम् अपि सज्जितः भवामि । स्मरामि गत वर्षे अपि अहं मातुलग्रामे रामलीलाम् अपश्यम्। तत्र ऋक्षराजजाम्बवतः अभिनयः अति मनोहरः आसीत् । अन्यानि अपि बहूनि दृश्यानि मनोहराणि आसन् । तत्र अहम् अवश्यमेव गमिष्यामि ।

मोहनः - आगच्छ, आवां चलावः ।

अभ्यासः

निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए ।

1. मेलापकः कुत्र अभवत् ?
2. ऋक्षराजजाम्बवतः अभिनयः कीदृशः आसीत् ?
3. तत्र के गमिष्यन्ति ?
4. तत्र कः अवश्यमेव गमिष्यति ?

संस्कृत में अनुवाद कीजिए -

1. हमारे देश में बहुत से मेले होते हैं ।
2. उनमें विजयदशमी का मुख्य स्थान है ।
3. हम दोनों मेला देखने जायेंगे ।
4. गतवर्ष भी हमारे गांव में मेला हुआ था ।
5. मेले में राम-रावण के युद्ध का दृश्य होगा ।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. तत्र आवां .... द्रक्ष्यावः ।
2. गतवर्षे अपि .... मातुल ग्रामे .... अपश्यम् ।
3. तत्र .... अवश्यमेव गमिष्यामि ।
4. क्षणं विरम्, अहम् अपि .... भवामि ।
5. राम-रावणयोः युद्धस्य .... अपि तत्र भविष्यति ।

शब्दार्थाः

मेलापकः	-	मेला
विविधानि	-	अनेक प्रकार के
जनसम्मर्दः	-	भीड़
सज्जितः	-	तैयार

PG7PAZ

'अवसर' में 'सु' उपसर्ग जोड़कर 'सुअवसर' शब्द बनता है, जिसका अर्थ है अच्छा मौका, इसी प्रकार 'स्पष्ट' में सु जोड़कर 'सुस्पष्ट' शब्द बना, इसका भी अर्थ हुआ अच्छी प्रकार से स्पष्ट (व्यक्त) ।

PGGKCH

10. बालगीतम्

(प्रस्तुत पाठ गेय है। हम स्वाभिमानी बने स्वयं भी प्रसन्न रहें और संसार में भी प्रसन्नता फैलाएं। दीन दुखियों और अनाथों का सहारा बने यही इस गीत का भाव है। आइए इसे स्वर और लय सहित गाएँ।)

मा कुरु दर्पं मा कुरु गर्वम्
मा भव मानी, मानय सर्वम्।
मा भज दैन्यं, मा भज शोकम्
मुदितमना भव मोदय लोकम्॥

मा वद मिथ्यां मा वद व्यर्थम्,
न चल कुमार्गे, न कुरु अनर्थम्
पाहि अनाथं, पालय दीनम्
लालय जननीजनक-विहीनम्॥

शब्दार्थाः

मा	= मत	मानय	= आदर करो
दर्पम्	= घमण्ड को	दैन्यम्	= दीनता को
भव	= बनो	भज	= ग्रहण करो
मान	= अभिमानी	मुदितमना	= प्रसन्न मन वाले
मोदय	= प्रसन्न करो	मिथ्या	= झूठ
पाहि	= रक्षा करो	जननीजनकविहीनम्	= माता पिता से वंचित

अभ्यास प्रश्नाः

प्रश्न (1) अधोलिखित में कर्म जोड़िए -

(क) .... मोदय।
(ख) .... पाहि।
(ग) .... पालय।
(घ) .... मानय।

प्रश्न (2) अधोलिखित शब्दों को विलोम शब्दों के साथ मिलाइए -

(1) सनाथः	-	शोकः
(2) सुमार्गः	-	मिथ्या
(3) हर्षः	-	अनाथः
(4) सत्यम्	-	मानी
(5) नम्रः	-	कुमार्गः

प्रश्न (3) अधोलिखित वाक्यों में अव्यय शब्द भरिए -

मिथ्या .... वद ।
कुमार्गे .... चल ।
.... मा वद ।
दर्पं .... कुरु ।

प्रश्न (4) अधोलिखित पङ्क्तियों को गीत के क्रम में लिखिए -

(1) लालय जननीजनक विहीनम् ।
(2) मा भज दैन्यं मा भज शोकम् ।
(3) मा भव मानी मानय सर्वम् ।
(4) पाहि अनाथं, पालय दीनम् ।
(5) मा कुरु दर्पं, मा कुरु गर्वम् ।
(6) मुदितमना भव मोदय लोकम् ।
(7) न चलु कुमार्गे न कुरु अनर्थम् ।
(8) मा वद मिथ्या, मा वद व्यर्थम् ।

(संकलित - संस्कृत धारा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली)

PGQGEA

PGZCFX

11. श्रृंङ्गिऋषेः नगरी

छत्तीसगढराजस्य पूर्वदिशि धमतरीजिलान्तर्गतं सिहावानगरी विद्यते । पर्वतस्य सघनगुहाभिः विविधैः मठैः च आच्छादिता इयं नगरी प्रसिद्धा । पर्वतस्योपरिभागे श्रृंङ्गिऋषेः आश्रमः अस्ति । श्रृंङ्गिऋषेः धर्मपत्नी शान्तादेवी अपि अस्मिन् पर्वते विराजते ।

पर्वतस्य गुहायां शक्तिस्वरूपिणी दुर्गा प्रतिष्ठिता । अस्य क्षेत्रस्य इयं सिहावानगरी प्रयागः इति अभिधीयते। सिहावाक्षेत्रस्य समीपे सांकरा नाम ग्रामः अस्ति । यत्र दन्तेश्वरीमाता बस्तरराज्ञः कुलदेवी इति ख्यातिं प्राप्ता । नगरवासिनः देवीं दन्तेश्वरीं शक्तिस्वरूपां मन्यन्ते । अत्रैव शक्तिस्वरूपा सतीमाई गादीमाई च विराजेते। ग्रामदेवता ठाकुरदेवः अपि जनैः पूज्यते । सघनवनानां मध्ये प्रतिष्ठिता देवीकालिका खल्लारीग्रामान्तर्गतं विद्यते । अत्र आगन्तुकाः श्रद्धालुजनाः स्वकामनाप्राप्त्यर्थं देवीं प्रार्थयन्ते । देवीकालिका तेषाम् आकांक्षाः पूरयति ।

देवीकालिका न केवलं छत्तीसगढ राज्ये प्रत्युत सर्वत्र प्रसिद्धा । अत्र कर्णेश्वरधाम - स्वविपुलसांस्कृतिक-सम्पदाभिः परिपूर्णम् अस्ति । भौगोलिक-प्राकृतिक-आदिम-संस्कृति-पुरातात्विक-सम्पदानां निधिः सप्तऋषीनां स्थली च इयं सिहावानगरी छत्तीसगढराज्ये अतिप्रसिद्धा ।

शब्दार्थाः

पर्वतस्य	-	पर्वत का	प्राप्त्यर्थम्	-	प्राप्ति के लिये
उपरिभागे	-	उपर भाग में	प्रार्थयन्ते	-	प्रार्थना करते हैं
विराजते	-	विद्यमान है	नगरवासिनः	-	नगरवासी लोग
अभिधीयते	-	कहते हैं	सम्पदानां निधि	-	सम्पदाओं का भण्डार
मन्यन्ते	-	मानते हैं			

अभ्यासः

1. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए ।

1. शक्तिस्वरूपा दुर्गा कुत्र प्रतिष्ठिता ?
2. सिहावाक्षेत्रं किम् अभिधीयते ?
3. सघनवनानां मध्ये खल्लारीग्रामान्तर्गतं का देवी विद्यते ?
4. सप्तऋषीनां तपस्थली का अस्ति ?

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

1. सिहावाक्षेत्रस्य समीपे .... ग्रामः अस्ति ।
2. पर्वतस्य गुहायां .... प्रतिष्ठिता ।
3. बस्तरराज्ञः .... इति ख्याति प्राप्ता ।
4. .... केवलं छत्तीसगढराज्ये न ख्याता प्रत्युत विश्वप्रसिद्धा ।

PH98HK

3. अस् धातु के लट्, लृट और लङ् लकार के सभी रूप लिखिये ।

12. अस्माकम् आहारः

अस्मिन् संसारे सर्वे प्राणिनः आहारं गृह्णन्ति । जीवनरक्षार्थम् आहारस्य अतीव आवश्यकता भवति ।

मानवस्य आहारः कीदृशः भवेत् इति विषये अस्माकं ऋषयः मुनयः वैद्याश्च उपदिशन्ति यत् बाल्यकालात् वृद्धावस्थापर्यन्तम् अस्माकम् आहारः सन्तुलितः भवेत् । सद्यः प्रसूतः शिशुः मातुः दुग्धमेव पिबति । मातुर्दुग्धं पौष्टिकं भवति । पौष्टिक-आहारेण शिशवः संवर्ध्यन्ते । सर्व-जनेभ्यः आहारे पौष्टिक फलानां महती आवश्यकता वर्तते अन्यथा ते दुर्बलाः अशक्ताश्च भविष्यन्ति ।

अस्माकम् आहारः उष्णम्, स्निग्धः, स्वादयुक्तः च भवेत् । मानवः मितभोगी भवेत् अन्यथा अजीर्णं भविष्यति, वैद्याः कथयन्ति-'अजीर्णमन्नं रोगस्य कारणमस्ति । प्रसन्नचित्तेन स्वच्छस्थाने संयमेन उपविश्य नात्यधिकं नातिद्रुतम् आहारं कुर्यात् ।

चणकः तण्डुलः, गोधूमः, द्विदलं, यवः, आढकी, मुद्गः, माषः इत्यादीनि अन्नानि सन्ति । कूष्माण्डकः, कर्कटी, अलाबूः, मूलिका, आम्रम्, इक्षुः, कदलीफलं इत्यादीनि शाकफलानि सन्ति । नवनीतं दुग्धं, घृतं, तक्रं, दधि इत्यादिकं पेयम् अस्ति । एते सर्वे शाकाहारि-मानवानाम् आहाराः ।

बालानां कृते दुग्धम् अमृतं कथ्यते । घृतं तु बलवर्धकम् । मधु रक्त-शोधनं करोति ।श्रीफलम् आमलकः, आमरूद्यः स्वास्थ्यं रक्षन्ति, उदर-शोधनं बलवर्धनं च कुर्वन्ति । उक्तञ्च-आहार-शास्त्रे ''शाकाहारी मनुष्यः दीर्घायुः भवति ।''

शब्दार्थाः

सर्वे प्राणिनः	-	सभीप्राणी
गृह्णन्ति	-	ग्रहण करते हैं
प्राणरक्षार्थम्	-	प्राण रक्षा के लिये

कीदृशः	-	कैसा
उपदिशन्ति	-	उपदेश देते हैं
यत्	-	कि
सद्यः प्रसूतः	-	तुरन्त पैदा हुआ
शिशुः	-	बालक
एव	-	ही
पौष्टिकम्	-	बल बढ़ाने वाला
संवर्धयन्ते	-	बढ़ते हैं
अशक्ताः	-	शक्तिहीन
उष्णम्	-	गर्म, ताजा
स्निग्धः	-	चिकना
स्वादयुक्तः	-	स्वादिष्ट
मितभोगी	-	कम खाने वाला
अजीर्णम्	-	अपच
संयमेन	-	संयमपूर्वक
उपविश्य	-	बैठकर
अतिद्रुतम्	-	बहुत शीघ्र
न	-	नहीं
चणकः	-	चना
तण्डुलः	-	चावल
गोधूमः	-	गेहूं
द्विदलम्	-	दाल
यवः	-	जौ
आढकी	-	अरहर की दाल
मुद्गः	-	मूंग
माषः	-	उड़द
इक्षुः	-	ईख
कूष्माण्डकः	-	कुम्हड़ा
अलाबूः	-	आलू
मूलिका	-	मूली

कदलीफलम्	-	केला
नवनीतम्	-	मक्खन
तक्रम्	-	मही(मट्ठा)
दधि	-	दही
पेयम्	-	पीने योग्य
एते	-	ये
कृते	-	के लिये
कथ्यते	-	कहा जाता है
रक्तशोधनम्	-	खून को शुद्ध करना
श्रीफलम्	-	नारियल
आमलकः	-	आंवला
आमरूद्यः	-	अमरूद
उक्तम्	-	कहा गया है
च	-	और

संधि-विच्छेद

वैद्याश्च	-	वैद्याः + च
मातुर्दुग्धम्	-	मातुः + दुग्धम्
फलादीनाम्	-	फल + आदीनाम्
अशक्ताश्च	-	अशक्ताः + च
नात्यधिकम्	-	न + अतिअधिकम्
नातिद्रुतम्	-	न + अतिद्रुतम्
इत्यादीनि	-	इति + आदीनि
इत्यादिकम्	-	इति + आदिकम्
उक्तञ्च	-	उक्तम् + च
दीर्घायुः	-	दीर्घ + आयुः
भवतीति	-	भवति + इति

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए-

1. प्राणरक्षार्थं कस्य अतीव आवश्यकता वर्तते ?
2. सद्यः प्रसूतः शिशुः कस्याः दुग्धम् पिबति ?
3. केन आहारेण शिशवः संवर्ध्यन्ते?
4. कः मितभोगी भवेत् ?
5. अजीर्णमन्नं कस्य कारणमस्ति?
6. कः मनुष्यः दीर्घायुः भवति ?

2. कोष्ठक में दिये गये शब्दों से रिक्त स्थान भरिये ।

(शिशवः, घृतम्, भवेत्, पेयम्)

1. मानवस्य आहारः कीदृशः .... ।
2. .... आहारेण संवर्धन्ते ।
3. दुग्धं, घृतं, तक्रं, दधि इत्यादिकं .... अस्ति।
4. .... तु बलवर्धकम् ।

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य प्रयोग कीजिए-

भविष्यन्ति, आहारः, कथयन्ति, भवेत्

4. 'अस्मद' (मैं) - सर्वनाम् शब्द की कारक रचना सभी विभक्तियों में लिखिए-

5. 'पा' (पिब्) धातु लट्लकार, सभी पुरूष व वचन में काल रचना कीजिए ।

PHRZKV

13. शोभनम् उपवनम्

PI1VMI

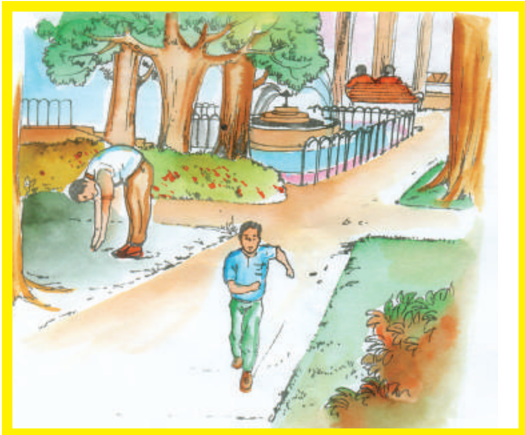

इदम् उपवनम् । मनोहरम् इदम उपवनम्। इयं मल्लिकालता । इमे शोभने लते । इमाः हरिताः लताः । इमानि हरितानि पत्राणि । इमानि मनोहराणि पुष्पाणि । अयं सरोवरः । तत्र तानि मनोहराणि कमलानि । अयं मयूरः । इमौ भ्रमरौ । इमाः तित्तिलिकाः। इमे कपोताः ।

अयम् अशोकवृक्षः । अयं वटवृक्षः । इमौ निम्बवृक्षौ । इमे आम्रवृक्षाः। इमे हरिताः वृक्षाः । इमानि मधुराणि फलानि । वृक्षाः अस्माकं मित्राणि । ते प्राणवायुदायकाः । अत्र भ्रमणं सुखदायकम् आरोग्यदायकं च ।

वृक्षाणां रोपणं फलदायकम् ।
यथा महाभारते लिखितम्
‘वृक्षाणां कर्तनं पापं-
वृक्षाणां रोपणं हितम्’

शब्दार्थाः

उपवनम्	-	बगीचा
मल्लिकालता	-	चमेली की बेल
भ्रमरौ	-	दो भंवरे
तित्तिलिकाः	-	तितलियां
प्राणवायुः	-	आक्सीजन
सुखदायकम्	-	सुख देने वाले हैं
रोपणम्	-	उगाना
कर्तनम्	-	काटना
हितम्	-	उपकार

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए-

1. इदम् शब्द स्त्रीलिङ्ग प्रथमा विभक्ति एकवचन का रूप है ।

   क. अयम् ख. अहम्
   ग. इयम् घ. इदम्

2. अस्माकं मित्राणि के ?

   क. कृषकाः ख. वृक्षाः
   ग. रक्षकाः घ. मक्षिका

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चित्रों की सहायता से दीजिये ।

क. अयं कः ? अयं ....

ख. इमौ कौ ? इमौ ....

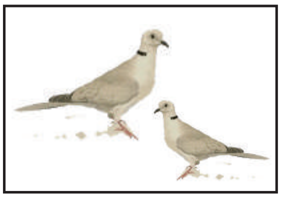

ग. इमे के ? इमे ....

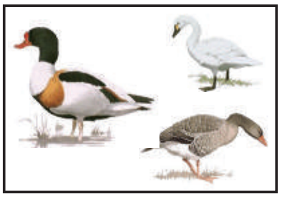

घ. इमाः काः ? इमाः ....

3. उचित पद से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

क. .... आम्रवृक्षः । (अयं, इदं, इयं)

ख. .... हरिताः लताः । (इदं, इमाः, इमानि)

ग. .... सरोवरः । (इयं, इदं, अयं)

घ. .... भ्रमरौ । (इदं, इमौ, इमाः)

4. अधोलिखित सारणियों के रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त पदों द्वारा कीजिए-

क.

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	लिङ्ग
इदम्	इमे	....	नपुंसकलिङ्ग
अयम्	....	....	पुल्लिङ्ग

ख.

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	लिङ्ग
तत्	....	तानि	नपुंसकलिङ्ग
....	तौ	ते	पुल्लिङ्ग
सा	ते	....	स्त्रीलिङ्ग

ग. अस्मद् शब्द प्रथमा विभक्ति ।

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अहम्	आवाम्	....
....	....	वयम्

घ. युष्मद् शब्द प्रथमा विभक्ति ।

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
त्वम्	......	यूयम्
त्वम	युवाम्	.....

ङ. वृक्ष शब्द प्रथमा विभक्ति ।

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
....	वृक्षौ	वृक्षाः
वृक्षः	वृक्षौ	....
वृक्षः	....	वृक्षाः

च. लता शब्द प्रथमा विभक्ति ।

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लता	लते	....
लता	....	लताः
....	लते	....

PIARP6

PP5F62

14. पण्डितजवाहरलालनेहरुः

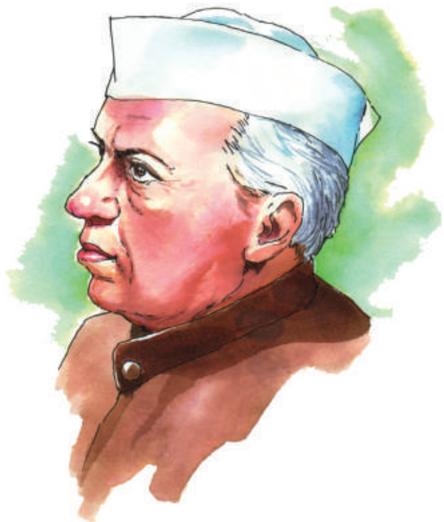

जवाहरलालनेहरुः महोदयः स्वतन्त्रभारतवर्षस्य प्रथमः प्रधानमन्त्री आसीत् । सः स्वतंत्रतासंग्रामे स्वेच्छयागतः । तदा महात्मागांधी अहिंसकान्दोलनस्य नेतृत्वं करोतिस्म ।

अस्य जनकः श्री मोतीलालनेहरुः मातास्वरूपरानी, कमलाधर्मपत्नी, इन्दिरा च एकसुता, विजयलक्ष्मीपण्डित भगिनी आसीत्। 'आंग्लदेशे' 'कैम्ब्रिज' इति विश्वविद्यालये शिक्षां समाप्य सः स्वदेशे समागतः । तदा प्रभृति सः स्वजीवनस्य लोकार्पणम् अकरोत् ।

जवाहरलालः कृपालुः, सहृदयः, वाग्मी, विधिज्ञः च आसीत्। महात्मागांधी यदि राष्ट्रपिता कथ्यते तर्हि नेहरुः राष्ट्रनिर्माता ।

नेहरुः लेखकः अपि आसीत् । तेन लिखितानि बहूनि पुस्तकानि सन्ति । नेहरुसाहित्यं लोकप्रियमस्ति । अद्यापि सर्वे तानि पुस्तकानि पठन्ति । ज्ञानसमृद्धाः च भवन्ति।

सः बहुवारं कारागारं अपि अगच्छत् । 1942 खिष्टाब्दे प्रस्तावः पारितः-'भारतं त्यज' अयं प्रस्तावः देशे सर्वत्र प्रसरितः । अस्मिन् आन्दोलने नेहरुःपरिवारस्य सक्रियः सहयोगः आसीत् । बालानां चाचानेहरु अतिप्रियः।

शब्दार्थाः

आसीत्	-	था
स्वेच्छया	-	अपनी इच्छा से
आगतः	-	आ गये
नेतृत्वम्	-	संचालन
सुता	-	पुत्री
भगिनी	-	बहन
समाप्य	-	समाप्त करके
प्रभृति	-	लेकर
लोकार्पणम्	-	देश के लिये अर्पित
वाग्मी	-	भाषणकला में निपुण

कृपालुः	-	दयालु
सहृदयः	-	स्वच्छ हृदय वाला
विधिज्ञः	-	विधिशास्त्र के ज्ञाता
कारागारः	-	जेल
अपि	-	भी
ख्रिष्टाब्दे	-	ईस्वी सन् में
भारतं त्यज	-	भारत छोड़ो
प्रसरितः	-	फैल गया

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए-

1. जवाहरलालस्य पितुः किं नाम ?
2. कमला कस्य धर्मपत्नी आसीत् ?
3. स्वाधीनभारते प्रथमः प्रधानमन्त्री कः आसीत् ?
4. स्वरूपरानी कस्य माता आसीत् ?
5. कस्य सुता इन्दिरा आसीत् ?
6. भारतं त्यज प्रस्तावः कदा पारितः ?

2. संस्कृत में अनुवाद कीजिए-

1. बालक पुस्तक पढ़ता है ।
2. वह आता है ।
3. तुम कहाँ जाते हो ।
4. श्री गुरु को प्रणाम ।
5. हम दोनों विद्यालय जाते हैं ।

PPEB7P

3. संधि विच्छेद कीजिए-

1. अद्यापि
2. समागतः
3. लोकार्पणम्

4. निम्नलिखित शब्दों की सभी विभक्तियों में कारक रचना लिखिए-

1. पुस्तक
2. विद्यालय

PPN79C

15. वर्षागीतम् (बालगीतम्)

एहि एहि रे वर्षाजलधर ।
ग्रामतडागे नैव बत जलम् ।
सीदति खिन्नं तटे गोकुलम् ॥

ग्रामनदीयम् खलु जलहीना ।
व्याकुलिता दृश्यन्ते मीनाः ।
गृहकूपेषु च न नहि नहि नीरम् ।

हृदयमतो मे जातमधीरम्
दुःखंदैन्यं सत्वरमपह ॥1॥ एहि एहि रे

तृषिता गावस्तृषिता लतिका ।
तृषितास्ते चातका वराकाः ।
आकाशे त्वं संचर संचर ॥2।. एहि एहि रे
तप्तं परितोऽस्माकं सदनम् ।
शुष्कप्रायं सदैव वदनम् ।

रवि ते जो ननु दहति लोचनम् ।
शरीरमखिलं घर्मक्लिन्नम् ।
प्रखरं सकलं वातावरणम् ।

दुर्धरमधुना लोक जीवनम्।
जनसंतापं सुदूरमपहर ॥3॥ एहि एहि रे

अर्थ

1. हे वर्षा करने वाले बादल ! आओ आओ गांव के तालाब में पानी नहीं है । तट पर गायों का झुण्ड प्यास के कारण व्याकुल हो रहा है । गांव की यह नदी भी पानी रहित होकर सूख गई है । इसकी मछलियाँ पानी के बिना तड़प रही हैं । (व्याकुल हो रही है) घरों के कुओं में पानी नहीं है । मेरा चित्त अब अधीर हो उठा है। हमारे दुःख और दैन्य को शीघ्र दूर करो । हे ! बादल तुम जाओ ।

2. ये शुक-सारिकायें (तौता-मैनायें) प्यासी है। गायें प्यासी है। लतायें प्यासी है। बेचारे चातक प्यासे हैं। हे बादल तुम आकाश में छा जाओ, बादल तुम आओ।
3. हमारा घर चारों ओर से गरम हो गया है। (तप गया है) हमारा मुख सूख रहा है। सूर्य की किरणें आखों को जला रही है। सारा शरीर पसीने से भीग गया है। सम्पूर्ण वातावरण प्रखर हो गया है। (संतप्त हो गया है) जनजीवन अब कष्टमय हो गया है। हे बादल जनो के संताप को अब दूर करो। बादल ! तुम आओ , आओ।

शब्दार्थाः

एहि	-	हे
जलधर	-	बादल
तडागे	-	तालाब में
नैव	-	नहीं
सीदति	-	कमजोर हो गया है
कूपेषु	-	कुओं में
अधीरम्	-	बिना धैर्य के
सत्वरम्	-	शीघ्र
अपहर	-	दूर करो
तृषिता	-	प्यासी
गावः	-	गायें
वराकाः	-	बेचारे
संचर	-	छा जाओ
परितः	-	चारों ओर
सदनम्	-	महल, भवन
वदनम्	-	मुख
तेजः	-	गर्मी, प्रकाश
ननु	-	अवश्य ही
दहति	-	जला रहा है
लोचनम्	-	आँख को
क्लिन्नम्	-	पसीना
प्रखरम्	-	गर्मी से संतप्त
दुर्धरम्	-	कष्टमय

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में दीजिए।

1. जलं विना जीवजन्तवः किम् अनुभवन्ति ?

2. केषु कूपेषु जलं नास्ति ?
3. तडागे किं नास्ति ?
4. किं जन्तवः तृषिताः सन्ति ?
5. जनानां सन्तापं कः दूरी करोति ?

2. खाली स्थानों को भरिये ।

1. जलधरः .... ददाति।
2. .... जलं सीदति ।
3. जलहीनेन मीनः .... भवति ।
4. वर्षाकाले .... आकाशे संचरन्ति ।
5. वर्षाकाले सरोवरे .... तरन्ति ।

3. प्रत्येक खण्ड में से एक-एक शब्द लेकर पांच वाक्य बनाइये।

मेघा	पवनः	वर्धते
शीतलः	इतस्ततः	सन्ति
दुग्धपानेन	कृष्णा	धावन्ति
बालकाः	मधुरं	वहति
दुग्धं	बुद्धिं	भवति

4. कोष्टकों में दिये गये हिन्दी शब्दों के स्थान पर संस्कृत के उचित शब्द लिखकर वाक्य पूर्ण कीजिए -

1. (वे सब) जले क्रीडन्ति ....
2. एषा (गाय) अस्ति ....
3. (उपवन में) मयूरः नृत्यति ....
4. (आकाश में) मेघाः नृत्यन्ति ....
5. (सभी) प्रसन्नाः सन्ति ....

PPX3AZ

16. दीपावलिः

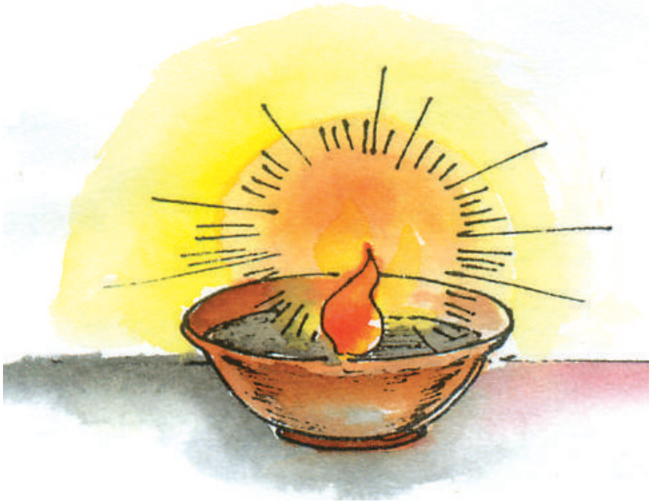

अस्माकं देशस्य नाम भारतवर्षः । एतस्मिन् देशे बहवः धर्मावलम्बिनः निवसन्ति । अतः अत्र अनेके उत्सवाः आयोज्यन्ते । एतेषु उत्सवेषु दीपावलिः अपि विशिष्टः महोत्सवः । अस्य नाममात्रेण अपि जनानां मनसि आनन्दस्य सञ्चारः भवति । यदा श्रीरामः रावणं जित्वा चतुर्दशवर्षस्य वनवासानन्तरम् अयोध्याम् आगच्छत् तदा सर्वेऽपि जनाः सोत्साहेन नगरीं सुसज्जिताम् अकुर्वन् । ते च दीपानां पंक्तिभिः श्री रामस्य स्वागताय परमानन्द-प्रदर्शनम् अकुर्वन् । जनाः एनम् उत्सवं कार्तिक मासस्य अमावस्यायां तिथौ मन्यन्ते । एवम् अयम् उत्सवः प्रतिवर्षं सम्पूर्णभारतवर्षे सोत्साहं समायोज्यते ।

इदानीं भारतीयाः दीपावल्याः पूर्वमेव स्वगृहाणि स्वच्छानि सुधाधौतानि च कारयन्ति।

गृहेषु जीर्णानां वस्तूनां स्थाने नवानि वस्तूनि आनीयन्ते । चित्रैः मूर्तिभिः च गृहाणि सुसज्जितानि क्रियन्ते । मिष्टान्नविक्रेतारः नवनवैः मिष्टान्नैः पण्यालयानि सुसज्जितानि कुर्वन्ति । विपणिषु जनानां महती गतागतिः भवति, महत् कोलाहलं च भवति ।

दीपावल्यां जनाः नूतनानि वसनानि धारयन्ति । ते पण्यवीथिकासु गत्वा बहुविधानि वस्तूनि क्रीणन्ति । ते मिष्टान्नानि क्रीत्वा इष्टमित्रेषु वितरन्ति । ते नानाविधानि विस्फोटकानि विस्फोटयन्ति । जनाः लक्ष्मीं पूजयित्वा मिष्टान्नानि खादन्ति । अयं उत्सवः भारतीयैः बहुउत्साहेन आयोज्यते। केचन् जनाः दीपावल्याः रात्रौ द्यूतक्रीडां कुर्वन्ति, मद्यपानम् अपि कुर्वन्ति तथा अनर्गलं व्यवहरन्ति एतत् तु न युक्तम् ।

एषः महोत्सवः आनन्दोत्सवः च । कुत्सितकर्माणि परित्यज्य सर्वैः श्रद्धया आनन्देन च आयोजनीयः ।

शब्दार्थाः

एतस्मिन्	-	इसमें
आयोज्यन्ते	-	मनाते हैं
उत्सवेषु	-	त्यौहारों में
विशिष्टः	-	विशेष
सञ्चारः	-	प्रवेश, पहुंच
जित्वा	-	जीतकर
चतुर्दशवर्षस्य	-	चौदह वर्ष का
वनवासान्तरम्	-	जंगल में वास के बाद
आगच्छत्	-	आये
सुसज्जिताम्	-	सजाने का काम
अकुर्वन्	-	किये
अमावस्यायाः	-	(कृष्ण पक्ष की पंद्रहवीं तिथि)अमावस्या में
सुधाधौतानि	-	सफाई, लिपाई, पोताई
जीर्णानाम्	-	पुराने (जीर्णो का)
आनीयन्ते	-	लातेहैं
नवनवैः	-	नए-नए
पण्यालयानि	-	दुकानों (बाजारों) को
विपणिषु	-	दुकानोंमें
महती	-	बड़ी
गता-गतिः	-	आना-जाना
कोलाहलम्	-	शोरगुल
वसनानि	-	कपड़ों को
पण्यवीथिकासु	-	बाजार की गलियों में
क्रीत्वा	-	खरीदकर
विस्फोटकानि	-	फटाकों को
द्यूतक्रीडाम्	-	जुआ
मद्यपानम्	-	शराब पीना
अनर्गलम्	-	व्यर्थ
युक्तम्	-	उचित
कुत्सितानि	-	खराब
आयोजनीयः	-	मनाया जाना चाहिये

अभ्यासः

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में दीजिए-

1. अस्य देशस्य नाम किम् ?
2. दीपावलिः कस्मात् कारणात् मन्यते ?
3. दीपावलिः कस्यां तिथौ दिवसे भवति ?
4. जनाः गृहेषु किं-किं कार्यं कुर्वन्ति ?
5. जनाः कार्तिक मासस्य अमावस्यायां तिथौ कस्य पूजनं कुर्वन्ति?

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. हरिः मिष्टान्नं .... ।
2. जनाः नूतनानि वसनानि .... ।
3. बहुधा जनाः विस्फोटकानि ....।
4. केचन जनाः .... कुर्वन्ति ।
5. रामः रावणं जित्वा अयोध्यां .... ।

3. निम्न शब्दों से धातु और प्रत्यय पृथक कीजिए-

जित्वा
गत्वा
क्रीत्वा
पूजयित्वा
नीत्वा ।

4. निम्नलिखित शब्दों का उपयोग कर वाक्य बनाइए-

अत्र
कोलाहलम्
विपणिषु
केचन्
तदा ।

PQFUEA

17. छत्तीसगढराज्यस्य धार्मिकस्थलानि

PQPQFX

छत्तीसगढराज्ये अनेकानि धार्मिकस्थानानि सन्ति। अभिलेखैः ज्ञायते यत् रायपुरं धार्मिकमहत्त्वस्य स्थलम् आसीत्। रायपुरनगरे अनेके देवालयाः विद्यन्ते। यथा दूधाधारी-शीतलामाता-महामाया-बूढेश्वर महादेव मन्दिराणि प्राचीनानि सन्ति । राजिमग्रामे कुलेश्वरमहादेवराजीवलोचनयोः द्वौ देवालयौ अति प्रसिद्धौ स्तः । गिरौधपुरीग्रामे सन्तगुरुघासीदासस्य सिद्धस्थलं दर्शनीयमस्ति।

बिलासपुरजिलान्तर्गतं रतनपुरे महामायामन्दिरं दर्शनीयं धार्मिकस्थलम् अस्ति। खल्लारीग्रामे पर्वतोपरि खल्लारी देवालयः अवस्थितः । अस्मिन् ग्रामे महाभारतस्य अनेकानि किम्वदन्तीनि प्रचलितानि सन्ति। कथ्यते यत् अस्य पर्वतोपरि भीमस्य पदचिह्नानि अङ्कितानि सन्ति । सिरपुरग्रामेऽपि लक्ष्मणकामगन्धर्वेश्वराणां देवालयाः वर्तन्ते। डोंगरगढे पर्वतोपरि स्थितो मातुः बम्लेश्वर्याः देवालयः न केवलं छत्तीसगढवासिनाम् अपितु सकलभारतवर्षस्य श्रद्धालूनां आकर्षणस्य केन्द्रम् अस्ति । अत्र प्रतिवर्षं मेलापकः आयोज्यते । शिवरीनारायणे अनेकानि प्राचीनानि दर्शनीयस्थलानि प्रतिष्ठितानि सन्ति । कथ्यते यत् अस्मिन् स्थाने भगवान् रामः शबर्याः उच्छिष्टानि बदरिकाणि अभक्षयत् । अस्य स्थलस्य समीपे खरोदग्रामे भगवतोः शङ्करलक्ष्मणयोः अति प्राचीनदेवालयौ विद्येते ।

धमतरीजिलायां कतिपये प्राचीनाः देवालयाः अपि सन्ति । येषु सर्वाधिकः लोकप्रियः बिलाईमातादेवालयः वर्तते । इयं माता अस्य क्षेत्रस्य रक्षां करोति इति मन्यते । दन्तेवाड़ा जिलायां दन्तेश्वरीदेवालयः अतिप्रसिद्धः । कवर्धाजिलायां भोरमदेव स्थाने भगवतः शिवस्य देवालयः दर्शनीयः मनोहरश्च । जांजगीरे नकटामंदिरं विष्णुमन्दिरञ्च अति प्राचीने स्तः । यदि वयं बिलासपुरनगरं गच्छामः तत्र तालाग्रामे देवरानीजेठानीदेवालयौ प्रसिद्धौ स्तः । दामाखेडाग्रामे कबीरपन्थीयानां प्रमुखतीर्थस्थलं तेषां प्राचीनकथा कथ्यन्ते । अस्मिन् क्षेत्रे एका जनश्रुतिः प्रचलिता यत्र भगवान् रामसीतालक्ष्मणाश्च वनवासकाले अवसन् । रायगढजिलायां नेतनगरान्तर्गतं जैनतीर्थानां चतुर्मुखीप्रतिमा प्राप्यते । छत्तीसगढराज्यस्य एतानि धार्मिकस्थलानि लोकश्रद्धां विभूषयन्तीति ।

शब्दार्थाः

ज्ञायते	-	ज्ञात होता है ।
देवालयः	-	मन्दिर
दर्शनीयम्	-	देखने योग्य
स्थलम्	-	स्थान
किम्वदन्तीनि	-	जनश्रुतियाँ
बदरिकाणि	-	बेर
उच्छिष्ठः	-	जूठे
अवशेषाः	-	खण्डहर
कन्दराणि	-	गुफाएँ

अभ्यासः

1. निम्नाङ्कित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में दीजिए -

क. महामाया मन्दिरे कस्याः प्रतिमा स्थापिता ?
ख. राजिमग्रामः कस्य हेतोः प्रसिद्धः ?
ग. गिरौधपुरी ग्रामे कस्य सिद्धस्थलं वर्तते ?
घ. भीष्मस्य पदचिह्नानि कुत्र अङ्कितानि सन्ति ?
ङ. कस्मिन् स्थाने प्रतिवर्ष मेलापकः आयोज्यते ?
च. दन्तेश्वरी-देवालयः कुत्र अवस्थितमस्ति ?
छ. कबीरपन्थीयानां तीर्थस्थलं कुत्र अस्ति ?

2. निम्नलिखित शब्दों की सन्धि-विच्छेद कीजिए -

बूढ़ेश्वरः, देवालयः, पर्वतोपरि, मनोहरः, गन्धर्वेश्वरः ।

3. निम्नलिखित शब्दों का समास विग्रह कीजिए -

राजीवलोचनम्, महामाया, महादेवः, पद्चिह्नानि

4. धार्मिक शब्द में 'धर्म' मूलशब्द है । 'धर्म' में 'इक' प्रत्यय के योग से धार्मिक शब्द बना है । इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में 'इक' प्रत्यय लगाकर नये शब्द बनाइए -

समाज + इक = ...
इतिहास + इक = ...
परिवार + इक = ...
राजनीति + इक = ...
संस्कृति + इक = ...
नगर + इक = ...

PQYLHK

5. निम्नलिखित प्रदत्त शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

मनोहराणि, उच्छिष्ठानि, बस्तरः, मेलापकः, दन्तेश्वरी, भीमस्य, दामाखेड़ा

क. अस्य पर्वतोपरि .... पदचिह्नानि सन्ति ।
ख. अत्र प्रतिवर्षं .... आयोज्यते ।
ग. भगवान् रामः शबर्याः .... बदरिकाणि अभक्षयत्।
घ. सर्व धार्मिक-स्थलानि अतीव .... सन्ति ।
ङ. बस्तर जिलायां .... देवालयः अतिप्रसिद्धमस्ति ।
च. कबीरपन्थीयानां प्रमुख तीर्थस्थलं .... ग्रामे अवस्थितम् ।

PR8HJ8

18. नीतिनवनीतम्

1. क्षणे तुष्टाः क्षणे रुष्टाः रुष्टाः तुष्टाः क्षणे-क्षणे ।
अव्यवस्थितचित्तानां प्रसादोऽपि भयङ्करः ॥1॥

2. सम्पूर्णकुम्भो न करोति शब्दमर्धो घटो घोषमुपैति नूनम् ।
विद्वान् कुलीनो न करोति गर्वं जल्पन्ति मूढास्तु गुणैर्विहीनाः ॥2॥

3. येषां न विद्या न तपो न दानं,
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः ।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः,
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥3॥

4. उद्यमेन हि सिध्यन्ति, कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य, प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥4।.

5. शैले-शैले न माणिक्यं, मौक्तिकं न गजे-गजे ।
साधवो न हि सर्वत्र, चन्दनं न वने-वने ॥5॥

6. यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा, शास्त्रं तस्य करोति किम् ।
लोचनाभ्यां विहीनस्य, दर्पणः किं करिष्यति ॥6॥

7. नरस्याभरणं रूपं, रूपस्याभरणं गुणः ।
गुणस्याभरणं ज्ञानं, ज्ञानस्याभरणं क्षमा ॥7॥

शब्दार्थाः

तुष्टाः	-	संतुष्ट होते हैं
क्षणे	-	क्षण में
घोषम्	-	आवाज
अव्यवस्थितचित्तानां	-	अव्यवस्थित चित्त का
प्रसादः	-	प्रसन्नता
कुम्भः	-	घड़ा
उपैति	-	प्राप्त होता है

कुलीनः	-	अच्छा कुल
मर्त्यलोके	-	संसार में
भारभूताः	-	भार स्वरूप
उद्यमेन	-	प्रयत्न से
मनोरथैः	-	मनोरथों द्वारा
प्रविशन्ति	-	प्रवेश करते हैं
शैले-शैले	-	पर्वत-पर्वत में
सर्वत्र	-	सभी जगह
वने-वने	-	जंगल-जंगल में
यस्य	-	जिसका
लोचनाभ्याम्	-	आंखों से
नरस्याभरणम्	-	मनुष्य का आभूषण

अभ्यासः

1. निम्नांकित प्रश्नों का संस्कृत भाषा में उत्तर दीजिए-

क. केषां नराणां चित्तानि अव्यवस्थितानि ?

ख. के जनाः भुवि भारभूताः सन्ति ?

ग. विद्या विहीनः जनः कीदृशः भवति ?

घ. कस्य दर्पणः किं करिष्यति ?

ङ. नरस्याभरणम् किम् ?

2. पहले और चौथे श्लोकों का अर्थ लिखिए-

3. पद पूर्ति कीजिए-

क. येषां न विद्या न तपो .... ।

ख. न हि सुप्तस्य सिंहस्य .... ।

ग. .... ज्ञानस्याभरणं क्षमा ।

4. निम्नांकित शब्दों के अर्थ लिखिए-

क. मृगाश्चरन्ति ख. सिध्यन्ति

ग. मौक्तिकम् घ. किं करिष्यति

PRAIIB

PRHDKV

19. सूक्तयः (खण्ड–अ)

1. अति सर्वत्र वर्जयेत् ।

अर्थ- अधिकता सब जगह छोड़ने योग्य है ।

2. अल्पविद्या महागर्वः ।

अर्थ- कम विद्या वाले महान गर्व करने लगते हैं ।

3. यथा बीजं तथा निष्पत्तिः ।

अर्थ- जिस प्रकार का बीज होगा उसी प्रकार फल उत्पन्न होगा ।

4. सर्वः सर्वं न जानाति ।

अर्थ- सभी सब कुछ नहीं जानते ।

5. धर्मस्य मूलम् अर्थः ।

अर्थ- धर्म का मूल धन है ।

6. मौनं सर्वार्थ साधनम् ।

अर्थ- मौन सबका साधन है ।

7. श्रद्धावान् लभते ज्ञानम् ।

अर्थ- श्रद्धावान् को ज्ञान प्राप्त होताहै ।

8. लोभः पापस्य कारणम् ।

अर्थ- लोभ पाप का कारण है।

9. विनाशकाले विपरीतबुद्धिः ।

अर्थ- विनाश के समय बुद्धि विपरीत हो जाती है।

10. हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः ।

अर्थ- हितकर और मनोहारी वचन दुर्लभ है ।

शब्दार्थाः

अति	-	अधिकता
वर्जयेत्	-	छोड़ना चाहिए (छोड़ने योग्य)
अल्पविद्या	-	थोड़ा ज्ञान

महागर्वः	-	महान गर्व, घमंड
निष्पतिः	-	फल
मौनम्	-	चुपचाप
धर्मस्य	-	धर्म का
लोभः	-	लालच
विपरीत बुद्धि	-	उल्टी बुद्धि
मनोहारि	-	सुन्दर
वचः	-	वचन

अभ्यासः

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

क. धर्मस्य .... अर्थः ।

ख. मौनं .... साधनम् ।

ग. लोभः .... कारणम् ।

घ. हितं .... च दुर्लभं वचः ।

2. संस्कृत सूक्तियों का हिन्दी में अर्थ लिखिए-

क. यथा बीजं तथा निष्पत्तिः ।

ख. सर्वः सर्वं न जानाति ।

ग. श्रद्धावान् लभते ज्ञानम् ।

घ. अल्प विद्यो महागर्वः ।

ङ. अति सर्वत्र वर्जयेत् ।

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए-

क. राम फल खाता है ।

ख. सीता पत्र लिखती है ।

ग. श्रद्धावान को ज्ञान प्राप्त होताहै ।

घ. विद्यावान नम्र होता है ।

ङ. लोभ पाप का कारण है ।

5. 'ज्ञा' धातु का लट्लकार परस्मैपद में रूप चलाइए-

जयतु छत्तीसगढप्रदेशः

गीतम् (खण्ड-ब)

जयतु छत्तीसगढप्रदेशः
जयतु जय-जय भारतम् ।

अस्य उत्तरे नर्मदा, दक्षिणे इन्द्रावती ।
राजीवलोचनराजिमे, दन्तेवाडायां दन्तेश्वरी ॥
स्थलमल्हारम् अति प्रसिद्धं, जयतु जय-जय भारतम्।
जयतु छत्तीसगढप्रदेशः, जयतु जय-जय भारतम् ॥

सतीस्थली महामायायां प्रसिद्धं देवेश्वरी ।
डोंगरगढस्थलं प्रसिद्धं, देवीमाता बम्बलेश्वरी ॥
देवभोगः अति प्रसिद्धः, हीरकरत्नानां खानम् ।
जयतु छत्तीसगढप्रदेशः जयतु जय-जय भारतम् ॥

उद्योगानां तीर्थस्थलीयं, भिलाई कोरबा भूतम् ।
बैलाडीला लौहखानं, मम प्रदेशे सुविख्यातम् ॥
धन्या जननी जन्मभूमिः, धन्यं भारतवर्षम् ।
जयतु छत्तीसगढप्रदेशः जयतु जय-जय भारतम् ॥

छत्तीसगढ-अञ्चले प्रसिद्धा, लोकसंस्कृतिः सरगुजिका ।
करमा पंडवानी प्रसिद्धं, अति प्रसिद्धं शुकनृत्यम् ॥
पंथी, ददरिया चापि प्रसिद्धं, जयतु जय-जय भारतम् ।
जयतु छत्तीसगढप्रदेशः जयतु जय-जय भारतम् ॥

मम प्रदेशे महानदी, सोन, जुहिलाश्च प्रवहन्ति ।
पेण्ड्रा अंचले परमानन्दं सरिता अरपा निस्सरति ॥
धन्यः छत्तीसगढप्रदेशः, धन्यं भारतवर्षम् ।
जयतु छत्तीसगढप्रदेशः, जयतु जय-जय भारतम् ॥

शब्दार्थाः

जयतु	-	जय हो
अस्य	-	इसका
मम	-	मेरा

दन्तेवाडायाम् - दन्तेवाड़ा में
सतीस्थली - सती स्थान
रत्नानाम् - रत्नों का
सुविख्यातम् - सुप्रसिद्ध
छत्तीसगढ अंचले - छत्तीसगढ़ क्षेत्र में
शुकनृत्यम् - सुआ नृत्य
प्रवहन्ति - बहती हैं
सरिता - नदी
निस्सरति - निकलती है

अभ्यासः

1. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए-

क. छत्तीसगढस्य उत्तर दिशि का नदी अस्ति?
ख. माता बम्बलेश्वरी कुत्र प्रसिद्धा ?
ग. रत्नानां खानं कुत्र अस्ति ?
घ. लौहखानं कुत्र स्थितम् अस्ति ?
ङ. छत्तीसगढ-अंचले किं नृत्यम् प्रसिद्धम अस्ति ?
च. पेण्ड्रा अंचले का नदी निस्सरति ?

2. निम्नांकित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए-

क. मेरा प्रदेश छत्तीसगढ़ है ।
ख. इसके दक्षिण में इन्द्रावती है ।
ग. छत्तीसगढ़ में सुआ नृत्य प्रसिद्ध है ।
घ. अरपा नदी पेण्ड्रा अंचल से निकलती है।
ङ. भारत माता की जय हो ।

3. 'अस्मद्' सर्वनाम शब्द की कारक रचना लिखिए-

4. निम्नांकित शब्दों का एक-एक संस्कृत वाक्य बनाइए-

प्रसिद्धम्, मल्हारम्, सुविख्यातम्, निस्सरति, जन्मभूमिः

5. निम्नांकित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

क. जयतु छत्तीसगढ़-प्रदेशः जयतु जय-जय .... ।
ख. .... राजिमे, दन्तेवाडायां दन्तेश्वरी ।
ग. बैलाडीला .... मम प्रदेशे सुविख्यातम् ।
घ. मम प्रदेशे .... सोन जुहिलाश्च प्रवहन्ति ।
ङ. पेण्ड्रा .... सरिता अरपा निस्सरति ।

PRJEJY

व्याकरणम्

संज्ञा शब्दों के रुप

शब्द रूप 'बालक' अकारान्त पुल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालकः	बालकौ	बालकाः
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
पञ्चमी	बालकात्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
षष्ठी	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
सप्तमी	बालके	बालकयोः	बालकेषु
सम्बोधन	हे बालक !	हे बालकौ!	हे बालकाः!

(इसी प्रकार नर, देव, वृक्ष, राम आदि अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द 'बालक' की भांति चलेंगे)

'पुस्तक' शब्द अकारान्त नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पुस्तकम्	पुस्तके	पुस्तकानि
द्वितीया	पुस्तकम्	पुस्तके	पुस्तकानि
तृतीया	पुस्तकेन	पुस्तकाभ्याम्	पुस्तकैः
चतुर्थी	पुस्तकाय	पुस्तकाभ्याम्	पुस्तकेभ्यः
पञ्चमी	पुस्तकात्	पुस्तकाभ्याम्	पुस्तकेभ्यः
षष्ठी	पुस्तकस्य	पुस्तकयोः	पुस्तकानाम्
सप्तमी	पुस्तके	पुस्तकयोः	पुस्तकेषु
सम्बोधन	हे पुस्तक !	हे पुस्तके !	हे पुस्तकानि

('पुस्तक' शब्द के रूप तृतीया विभक्ति से 'बालक' शब्द की भांति चलेंगे)

(इसी तरह पुष्प, वन, जल, फल, नयन, सुख, गृह, वस्त्र, भोजन, शयन, शरण, नगर, स्थान आदि के रुप चलेंगे।)

'बालिका' शब्द आकारान्त स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालिका	बालिके	बालिकाः
द्वितीया	बालिकाम्	बालिके	बालिकाः
तृतीया	बालिकया	बालिकाभ्याम्	बालिकाभिः
चतुर्थी	बालिकायै	बालिकाभ्याम्	बालिकाभ्यः
पञ्चमी	बालिकायाः	बालिकाभ्याम्	बालिकाभ्यः
षष्ठी	बालिकायाः	बालिकयोः	बालिकानाम्
सप्तमी	बालिकायाम्	बालिकयोः	बालिकासु
सम्बोधन	हे बालिके !	हे बालिके !	हे बालिकाः !

(इसी प्रकार - शाला, माला, रमा, कन्या, बाला, सुधा, जनता, तृष्णा, परीक्षा, लता, यात्रा, वर्षा, विद्या, सेवा, कक्षा, सभा आदि के रुप बालिका स्त्रीलिङ्ग के समान चलेंगे ।)

'मुनि' शब्द इकारान्त पुल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पञ्चमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुनयोः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुनयोः	मुनिषु
सम्बोधन	हे मुने !	हे मुनी !	हे मुनयः !

(इसी प्रकार - हरि, कवि, कपि, रवि आदि इकारान्त पुल्लिङ्ग के रूप 'मुनि' की तरह चलेंगे)

'भानु' शब्द उकारान्त पुल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पञ्चमी	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
षष्ठी	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्

सप्तमी	भानौ	भान्वोः	भानुषु
संबोधन	हे भानो !	हे भानू !	हे भानवः !

(इसी प्रकार-गुरु, शिशु, साधु, विष्णु, प्रभु आदि उकारान्त पुल्लिङ्ग के रूप 'भानु' की तरह चलेंगे)

'धेनु' शब्द उकारान्त स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वे, धेन्वै	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेनोः, धेन्वाः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेनोः, धेन्वाः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेनौ, धेन्वाम्	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो !	हे धेनू !	हे धेनवः !

(इसी प्रकार-तनु,चञ्चु, रज्जु आदि उकारान्त स्त्रीलिङ्ग के रूप 'धेनु' के समान चलेंगे)

'नदी' शब्द ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि !	हे नद्यौ !	हे नद्यः !

'ईकारान्त' सभी शब्द प्रायः स्त्रीलिङ्ग होते हैं। इनके रूप (लक्ष्मी, श्री, स्त्री, ह्री, घी, भी आदि को छोड़कर) 'नदी' के समान चलते हैं। 'लक्ष्मी' शब्द कर्ताकारक एकवचन में 'लक्ष्मीः' बनता है, शेष रूप 'नदी' के समान ही होते हैं। नदी के समान वाणी, भारती, भागीरथी, भगिनी, सरस्वती जानकी, पृथ्वी आदि शब्दों के रुप चलेंगे ।

सर्वनाम शब्द रूप

सर्वनाम- 'अस्मद्' (मैं) शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

सर्वनाम 'युष्मद्' (तुम) शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

सर्वनाम 'तद' (वह) पुल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

सर्वनाम शब्द 'तद्' (वह) स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

सर्वनाम शब्द 'तद्' (वह) नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

तृतीया विभक्ति से 'तद्' (वह) नपुंसकलिङ्ग के रूप 'तद्' (वह) पुल्लिङ्ग के समान ही चलाये जाते हैं ।

सर्वनाम शब्द 'किम्' (कौन) पुल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

सर्वनाम शब्द 'किम्' (कौन) स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः

तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पञ्चमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

सर्वनाम् शब्द 'किम्' (कौन) नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि

तृतीया विभक्ति से किम् (कौन) नपुंसकलिङ्ग के रूप किम् (कौन) पुल्लिङ्ग के समान चलते हैं।

विशेषण-

संख्यावाचक शब्दों के रूप 'एक' शब्द

'एक' शब्द के रूप केवल एकवचन में ही चलते हैं। तीनों लिङ्गों के रूप निम्नलिखित हैं।

विभक्ति	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	एकः	एका	एकम्
द्वितीया	एकम्	एकाम्	एकम्
तृतीया	एकेन	एकया	एकेन
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै
पञ्चमी	एकस्मात्	एकस्याः	एकस्मात्
षष्ठी	एकस्य	एकस्याः	एकस्य
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

संख्यावाचक शब्दों के रूप 'द्वि' शब्द

'द्वि' दो शब्द के रूप केवल द्विवचन में ही चलते हैं। स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग के रूप समान होते हैं।

विभक्ति	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
प्रथमा	द्वौ	द्वे
द्वितीया	द्वौ,	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः

'त्रि' तीन के रूप केवल बहुवचन में चलते हैं ।

विभक्ति	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	त्रयः	तिस्त्रः	त्रीणि
द्वितीया	त्रीन्	तिस्त्रः	त्रीणि
तृतीया	त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
पञ्चमी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
षष्ठी	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
सप्तमी	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

'चतुर्' च शब्द

विभक्ति	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वितीया	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि
तृतीया	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
पञ्चमी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

'पञ्चन्' पाँच शब्द

'पञ्चन्' तथा इसके आगे के संख्यावाची शब्द तीनों लिङ्गों में समान होते हैं।

विभक्ति	लिङ्ग
प्रथमा	पञ्च
द्वितीया	पञ्च
तृतीया	पञ्चभिः
चतुर्थी	पञ्चभ्यः
पञ्चमी	पञ्चभ्यः
षष्ठी	पञ्चानाम्
सप्तमी	पञ्चसु

उपसर्ग

संस्कृत भाषा में उपसर्गों का बहुत महत्व है। ये प्रायः शब्दों व धातुओं के पूर्व जोड़े जाते हैं। इनके जुड़ने से धातु का अर्थ प्रायः परिवर्तित हो जाता है।

परिभाषा

गति संज्ञक शब्द उपसर्ग कहलाते हैं। इनके धातु के पूर्व लगने से एक नया शब्द बन जाता है और प्रायः शब्द का अर्थ बदल जाता है ।

उदाहरण निम्नलिखित है :-

प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव्, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आंङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप ये प्रादि कहलाते हैं।

यथा - प्र - प्रमाण, प्रभाव, प्रार्थना ।
परा - परागत, पराभव, पराजय ।

कारक का सामान्य परिचय

क्रमांक	विभक्ति	कारक	चिह्न
1.	प्रथमा	कर्ता	ने
2.	द्वितीया	कर्म	को
3.	तृतीया	करण	से (के द्वारा)
4.	चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिये
5.	पञ्चमी	अपादान	से (अलग होने के अर्थ में)
6.	षष्ठी	सम्बन्ध	का, के, की, रा, रे, री
7.	सप्तमी	अधिकरण	में, पै, पर
8.	सम्बोधन	सम्बोधन	हे ! ओ ! अरे ! रे !

संस्कृत में वाक्य रचना करते समय कर्ता और क्रिया आवश्यक रूप से ध्यान देने योग्य है।

1. प्रथमा विभक्ति (कर्ताकारक)

प्रथमा विभक्ति का प्रयोग कर्ताकारक अर्थात संज्ञा शब्दों के लिये किया जाता है। जैसे- रामः, बालकः, अश्वः, पुस्तकम् आदि।

2. द्वितीया विभक्ति (कर्म कारक)

कर्मकारक के योग में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। कर्ता, क्रिया के द्वारा जिसे सर्वाधिक रूप से प्राप्त करना चाहता है उसे कर्म कारक कहते हैं ।

3. तृतीया विभक्ति (करण कारक)

क्रिया की सफलता में जो सबसे अधिक सहायक हो उसे करण कहते हैं। करण में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

जैसे - सः कन्दुकेन क्रीडति ।
सीमा कलमेन लिखति ।

4. चतुर्थी विभक्ति (सम्प्रदान कारक)

जिसके लिये कोई काम किया जाता है। उसे सम्प्रदान कहते हैं। सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है।

जैसे - धनिकः सेवकाय धनं यच्छति।
अध्यापकः छात्राय पुस्तकं यच्छति।

5. पञ्चमी विभक्ति (अपादान कारक)

जिससे कोई वस्तु अलग हो उसे अपादान कहते हैं। अपादान में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

जैसे - वृक्षात् पत्राणि पतन्ति ।
छात्रः विद्यालयात् आगच्छति ।

6. षष्ठी विभक्ति (सम्बन्ध कारक)

सम्बन्ध बताने के लिये षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

जैसे - मम पिता अध्यापकः अस्ति ।
ग्रामस्य जनाः नगरं गच्छन्ति ।

7. सप्तमी विभक्ति (अधिकरण कारक)

क्रिया का आधार अधिकरण कहलाता है । अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है।

जैसे - मकराः जले तरन्ति ।
सः उद्याने भ्रमति ।

8. सम्बोधन कारक

सम्बोधन कारक को प्रथमा विभक्ति में सम्मिलित किया जाता है । सम्बोधन कारक के चिन्ह हैं - भो ! अरे ! रे ! आदि

जैसे - भो ! राम माम् उध्दर ।

क्रिया

क्रिया का अर्थ है - करना या होना । जैसे मैं पढ़ता हूँ । यहां पढ़ने का काम किया जा रहा है । या हो रहा है । अतः 'पढ़ना' क्रिया से 'पढ़ता हूं' रूप बनाया गया है।

धातु

क्रिया के मूलरूप को 'धातु' कहते हैं। जैसे - 'पठामि' क्रिया का मूलरूप 'पठ्' है। 'पठ्' धातु से 'पठामि' क्रिया बनी है। क्रिया में प्रत्यय जुड़े रहते हैं, धातु में नहीं। संस्कृत में धातुएँ बहुत हैं जैसे - गम् (गच्छ) = जाना

भू(भव्) = होना
लिख् = (लिखना), हंस् (हँसना), कृ (करना), अस् (होना),
पा (पिब्) = पीना
नी (नय्) = ले जाना आदि

लकार

संस्कृत में 'काल' सूचित करने के लिये 'लकार का प्रयोग किया जाता है। वर्तमान काल के लिए 'लट्लकार' भूतकाल के लिये 'लङ्लकार' और भविष्यकाल के लिये 'लृट्लकार' का प्रयोग किया जाता है। आज्ञार्थ में 'लोट्' और विध्यर्थ में 'विधि लिङ्' लकार प्रयुक्त होता है।

1. वर्तमान काल (लट्लकार) - गम् (गच्छ्) - जाना

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम या अन्य पुरुष	सः गच्छति । (वह जाता है)	तौ गच्छतः । (वे दोनों जाते हैं)	ते गच्छन्ति । (वे सब जाते है)
मध्यम पुरुष	त्वं गच्छसि । (तुम जाते हो)	युवां गच्छथः । (तुम दोनों जाते हो)	यूयं गच्छथ । (तुम सब जाते हो)
उत्तम पुरुष	अहं गच्छामि। (मैं जाता हूं)	आवां गच्छावः । (हम दोनों जाते हैं)	वयं गच्छामः । (हम लोग जाते हैं)

2. भूतकाल (लङ्लकार) - गम् (गच्छ्) - जाना

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः अगच्छत् । (वह गया।)	तौ अगच्छताम् । (वे दोनो गये)	ते अगच्छन् । (वे सब गये)
मध्यम पुरुष	त्वम् अगच्छः । (तुम गये)	युवाम् अगच्छतम् । (तुम दोनों गये)	यूयम् अगच्छत । (तुम लोग गये)
उत्तम पुरुष	अहम् अगच्छम् । (मैं गया)	आवाम् अगच्छाव । (हम दोनों गये)	वयम् अगच्छाम । (वे सब गये)

3. भविष्य काल (लृट्लकार) - गम् (गच्छ्) - जाना

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः गमिष्यति । (वह जायेगा)	तौ गमिष्यतः । (वे दोनों जायेंगे)	ते गमिष्यन्ति । (वे सब जायेंगे)

मध्य पुरुष	त्वं गमिष्यसि । (तुम जाओगे)	युवां गमिष्यथः । (तुम दोनों जाओगे)	यूयं गमिष्यथ । (तुम सब जाओगे)
उत्तम पुरुष	अहं गमिष्यामि । (मैं जाऊंगा)	आवां गमिष्यावः । (हम दोनों जायेंगे)	वयं गमिष्यामः । (हम लोग जायेंगे)

धातु रूप

'लट्' लकार (वर्तमानकाल) पठ् (पढ़ना) धातु - परस्मैपद

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अ.पु.	पठति	पठतः	पठन्ति
म.पु.	पठसि	पठथः	पठथ
उ.पु.	पठामि	पठावः	पठामः

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अ.पु.	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
म.पु.	अपठः	अपठतम्	अपठत
उ.पु.	अपठम्	अपठाव	अपठाम

'लृट्'लकार (भविष्यकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अ.पु.	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
म.पु.	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उ.पु.	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

'गम्'(गच्छ्) - जाना - 'लट्' लकार - वर्तमान काल

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अ.पु.	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
म.पु.	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उ.पु.	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

'लङ्'लकार - भूतकाल

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अ.पु.	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
म.पु.	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उ.पु.	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

'लृट्लकार' - भविष्यकाल

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अ.पु.	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
म.पु.	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उ.पु.	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

'दृश्' (पश्य) - देखना धातु - 'लट्'लकार - वर्तमानकाल

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अ.पु.	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
म.पु.	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उ.पु.	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

'लङ्लकार - भूतकाल

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अ.पु.	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
म.पु.	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उ.पु.	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

'लृट्' लकार-भविष्यकाल

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अ.पु.	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
म.पु.	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उ.पु.	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

इसी प्रकार - वद् (बोलना, चल् (चलना), खेल् (खेलना), पा-पिब् (पीना), भू-भव (होना), पत् (गिरना), नी-नय् (ले जाना), स्था-तिष्ठ् (ठहरना), लिख् (लिखना), मिल् (मिलना), पृच्छ् (पूछना) तथा इच्छ् (इच्छा करना, चाहना) आदि परस्मैपद धातु रूप चलेंगे। क्रिया के मूल रूप 'धातु' में प्रत्यय जोड़कर धातु-रूप बनाये जाते हैं। पुरुष, तथा वचन के अनुसार उनके भिन्न रूप हो जाते हैं। प्रत्यय वे शब्दांश हैं जो धातु के अन्त में जोड़े जाते हैं। इनके जुड़नेसे धातुरूप में परिवर्तन होजाता है और उसका अर्थ बदल जाता है। प्रत्ययों के अनुसार कर्ता-क्रिया प्रयोग विधि के उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जाती है। एक उदाहरण कर्ता-क्रिया प्रयोग विधि (प्रत्ययों के अनुसार)

पुरुष	वचन	कर्ता	लट्लकार	लङ्लकार	लृटलकार
अन्य पुरुष	एकवचन	सः (वह)	पठति - ति	अपठत् - त्	पठिष्यति - ष्यति
या	द्विवचन	तौ(वे दोनों)	पठतः - तः	अपठताम्- ताम्	पठिष्यतः - ष्यतः
प्रथम पुरूष	बहुवचन	ते(वे सब)	पठन्ति - अन्ति	अपठन् - अन्	पठिष्यन्ति - ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	एकवचन	त्वम्(तुम)	पठसि - सि	अपठः - :	पठिष्यसि - ष्यसि
	द्विवचन	युवाम्(तुम दोनों)	पठथः - थः	अपठतम् - तम्	पठिष्यथः - ष्यथः
	बहुवचन	युयम्(तुम सव)	पठथ - थ	अपठत - त	पठिष्यथ - ष्यथ
उत्तम पुरुष	एकवचन	अहम्(मै)	पठामि - आमि	अपठम् - अम्	पठिष्यामि - ष्यामि
	द्विवचन	अवाम्(हम दोनों)	पठावः - आवः	अपठाव - आव	पठिष्यावः - ष्यावः
	बहुवचन	वयम्(हम सब)	पठामः - आमः	अपठाम - आम	पठिष्यामः - ष्यामः

वचन

संस्कृत में तीन वचन होते हैं

1. एकवचन 2. द्विवचन 3. बहुवचन

1. एकवचन

एकवचन का बोध कराता है। जैसे बालकः (एकवचन), मानवः (एक मनुष्य), वृक्षः (एक वृक्ष)

2. द्विवचन

द्विवचन का बोध कराता है। जैसे - बालकौ (दो बालक), मानवौ (दो मनुष्य), वृक्षौ (दो वृक्ष) आदि।

3. बहुवचन

दो से अधिक का बोध कराता है। जैसे - बालकाः (बहुत से बालक), मानवाः (बहुत से मनुष्य), वृक्षाः (बहुत सेवृक्ष)

नोट - 'द्विवचन' पहचान करनेके लिये वाक्य में 'दो' या 'दोनों' शब्द का प्रयोग अनिवार्य रूप से होगा।

जैसे - 1. दो बालक पढ़ते हैं। (द्वौ बालकौ पठतः)

2. तुम दोनों कहां जाते हो ? (युवां कुत्र गमिष्यथः)

लिङ्ग

संस्कृत में तीन लिङ्ग होते हैं ।

1. पुल्लिङ्ग 2. स्त्रीलिङ्ग 3. नपुसंकलिङ्ग

1. पुरुष जाति को बताने वाले शब्द **पुल्लिङ्ग** होते हैं । जैसे - नरः, बालकः, गजः, वृक्षः आदि ।
2. स्त्री जाति का बोध करानेवाले शब्द **स्त्रीलिङ्ग** होते हैं । जैसे - शाला, माला, नदी, बालिका, रमा आदि ।
3. जो शब्द स्त्री जाति और पुरूष जाति दोनों का बोध नहीं कराते हैं वे **नपुंसकलिङ्ग** होते हैं । जैसे - फलम्, वनम्, पुष्पम्, पत्रम् आदि..।

पुरूष

संस्कृत में पुरूष तीन होतेहै ।

1. प्रथम पुरुष 2. मध्यम पुरुष 3. उत्तम पुरुष

1. प्रथम पुरुष

जिसके संबंध में कुछ कहा जाये वह प्रथम पुरु ष होताहै । प्रथम पुरुष को अन्य पुरुष भी कहते हैं । जैसे - सः (वह), तौ (वे दोनों), ते (वे सब) तथा

बालकः (एक बालक), बालकौ (दो बालक), बालकाः (बहुत से बालक)

2. मध्यम पुरुष

जिससे बात की जाये अर्थात सुनने वाला मध्यम पुरु ष होता है । जैसे - त्वम् (तुम), युवाम् (तुम दोनों), युयम् (तुम सब)

3. उत्तम पुरुष

जो बात करता हो अर्थात् कहने या बोलने वाला उत्तम पुरुष होता है । जैसे - अहम् (मैं) आवाम् (हम दोनों), वयम् (हम सब) बातचीत का सम्बन्ध तीन व्यक्ति से होता है - 1. कहने वाला 2. सुनने वाला 3, जिसके सम्बन्ध में कुछ कहा जाये । इस प्रकार कहने वाला उत्तम पुरूष, सुनने वाला मध्यम पुरुष, और जिसके सम्बन्ध में कुछ कहा जाये वह अन्य पुरूष या प्रथम पुरूष कहलाता है।

नोट - संस्कृत में अनुवाद करते समय यह बात विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिये कि वाक्य का कर्ता जिस पुरूष व वचन में होगा क्रिया भी उसी पुरुष व वचन में होगी । जैसे -

1. सः पठति । (वह पढ़ता है ।)
2. तौ पठतः । (वे दोनों पढ़ते हैं ।)

3. ते पठन्ति । (वे सब पढ़ते हैं ।)
4. त्वं पठसि । (तुम पढ़ते हो ।)
5. युवां पठथः । (तुम दोनों पढ़ते हो ।)
6. यूयं पठथ । (तुम सब पढ़ते हो ।)
7. अहं पठामि । (मै पढ़ता हूँ ।)
8. आवां पठावः । (हम दोनों पढ़ते हैं)
9. वयं पठामः । (हम लोग पढ़ते हैं ।)

नोट - श्, ष्, स्, र्, ओ वर्ण सन्धि-विच्छेद करते समय विसर्ग बन जाते हैं । जैसे -

1. सुन्दरश्चन्द्र - सुन्दरः + चन्द्रः
2. धनुष्टङ्कारः - धनुः + टंकारः
3. नमस्ते - नमः + ते
4. दुरात्मा - दुः + आत्मा
5. मनोरमाः - मनः + रमाः
6. सोऽहम् - सः + अहम्

अव्यय

जिनका रूप परिवर्तित नहीं होता अव्यय कहलाते हैं । अथवा तीनों लिङ्गों, सभी विभक्तियों और सभी वचनों में जो समान रहता है वह अव्यय है ।

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु ।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ।।

कुछ अव्यय इस प्रकार हैं यथा -

1.	अधुना	=	अब
2.	अद्य	=	आज
3.	ह्यः	=	कल (बीता हुआ)
4.	श्वः	=	कल (आनेवाला)
5.	अधः	=	नीचे
6.	पश्चात्	=	बाद में
7.	उपरि	=	ऊपर
8.	ततः	=	फिर
9.	यतः	=	क्योंकि
10.	कुतः	=	कहांसे

11.	सर्वतः	=	सभी ओर से
12.	पुरतः	=	आगे, सामने
13.	पुरः	=	आगे, सामने
14.	यदा	=	जब
15.	कदा	=	कब
16.	तदा	=	तब
17.	कथम्	=	कैसे
18.	अतः	=	इसलिये
19.	अपि	=	भी
20.	कुत्र	=	कहां

ब्रेल एक परिचय

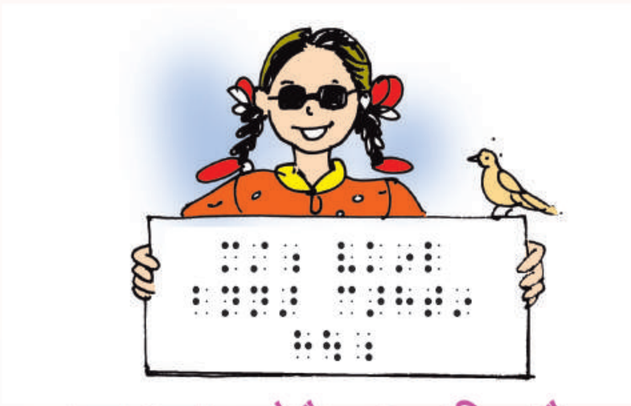

क्या आप जानते है यह क्या लिखा है

यह लिखा है –**मैं वकील बनना चाहती हूं।**

देवनागिरी, गुरूमुखी इत्यादि लिपियों की तरह ही ब्रेल भी एक लिपि है। ब्रेल लिपि का उपयोग दृष्टिहीन व्यक्तियों द्वारा पढ़ने एवं लिखने के लिये किया जाता है। ब्रेल लिपि का अविष्कार लुई ब्रेल द्वारा सन् 1829 में किया गया था। ब्रेल लिपि उभरे हुए छ: बिन्दुओं पर आधारित होती है, इन छ: बिन्दुओं से मिलकर एक सेल बनता है, प्रत्येक सेल में एक वर्ण (अक्षर) लिखा जाता है। ब्रेल लिखने के लिये स्टाइलस एवं विशेष प्रकार की स्लेट का उपयोग किया जाता है जिसमें छ:–छ: बिन्दुओं के कई सेल बने होते हैं इसे ब्रेल स्लेट कहा जाता है। ब्रेल स्टेल में मोटे कागज़ की शीट पर स्टाइलस के द्वारा लिखा जाता है। ब्रेल स्लेट की सहायता से ब्रेल लिपि में लिखते समय सीधे हाथ से उलटे हाथ की तरफलिखा जाता है जिससे की उभार दूसरी तरफ आते हैं। इन्ही उभारों को हाथ की उंगलियों की सहायता से छू कर पढ़ा जाता है। ब्रेल के छ: बिन्दुओं का क्रम इस प्रकार होता है।

1	4
2	5
3	6

ब्रेल बिन्दु

इन छ: बिन्दुओं को लेकर 63 अलग-अलग आकृतियां बनाई जा सकती है।
कुछ आकृतियां निम्न प्रकार हैं

ब्रेल चार्ट

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
⠁	⠜	⠊	⠔	⠥	⠳	⠑	⠌	⠕	⠪	⠰
अ:	**ऋ**	**क**	**ख**	**ग**	**घ**	**ङ**	**च**	**छ**	**ज**	**झ**
⠠	⠐⠗	⠅	⠨	⠛	⠣	⠬	⠉	⠡	⠚	⠴
ञ	**ट**	**ठ**	**ड**	**ढ**	**ण**	**त**	**थ**	**द**	**ध**	**न**
⠒	⠾	⠺	⠫	⠿	⠼	⠞	⠹	⠙	⠮	⠝
प	**फ**	**ब**	**भ**	**म**	**य**	**र**	**ल**	**व**	**श**	**ष**
⠏	⠖	⠃	⠘	⠍	⠽	⠗	⠇	⠧	⠩	⠯
स	**ह**	**क्ष**	**त्र**	**ज्ञ**	**ड़**	**ढ़**				
⠎	⠓	⠟	⠈⠞⠗	⠱	⠻	⠐⠻				

नोट : उभारे हुए बिन्दुओं को यहां मोटे बिन्दुओं के रूप में दिखाया गया है।

Copyright © 2008 ARUSHI. All rights reserved.

क्या आप जानते हैं इकबाल आपसे क्या कह रहा है?

इकबाल आपसे कह रहा है मैं कक्षा में प्रथम आया!

सांकेतिक भाषाः सामान्य परिचय

सांकेतिक भाषा का उपयोग श्रवण बाधित व्यक्ति द्वारा संप्रेषण हेतु किया जाता है। वाक् के अभाव में श्रवण बाधित सांकेतिक भाषा का उपयोग करते हैं। आमतौर पर लोगों की धारणा है कि सांकेतिक भाषा में व्याकरण का अभाव होता है परन्तु यह सही नहीं है, सांकेतिक भाषा में भी व्याकरण है। व्याकरण की दृष्टि से अमेरिकन सांकेतिक भाषा सबसे ज्यादा उन्नत है। अमेरिकन सांकेतिक भाषा फिंगर स्पेलिंग पर निर्भर है तथा वहां सिंगल हैण्डेड फिंगर स्पेलिंग का प्रयोग किया जाता है। इंडियन सांकेतिक भाषा में डबल हैंड़ेड फिंगर स्पेलिंग का प्रयोग किया जाता है। आइये अब हम डबल हैंड़ेड फिंगर स्पेलिंग जाने–

Copyright © 2008 ARUSHI. All rights reserved.

यदि आपके परिवार में कोई शारीरिक रूप से विकलांग बच्चा है तो–

- जब आपको पता चले कि आपका बच्चा सामान्य से कुछ अलग है तथा उसकी शारीरिक गतिविधियां भी सामान्य से भिन्न हैं तब बच्चे की समस्या से संबंधित सभी प्रकार की जानकारी किसी विशेषज्ञ से लें जैसे – किस प्रकार के व्यायाम से बच्चा चलना–फिरना तथा अन्य गतिविधियाँ जल्दी सीख सकता है।
- जितनी कम उम्र में विकलांगता का पता लग जाए उतनी ही जल्दी व्यायाम की सहायता से बच्चे को शारीरिक कौशल सीखने में मदद की जा सकती है।
- इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि वह बच्चा जो स्वतंत्र रूप से चल फिर नहीं सकता उसे भी सभी सामाजिक क्रियाकलापों में भागीदार बनाए। अगर आपके घर कोई मेहमान आते हैं तो अपने विकलांग बच्चे का भी उनसे परिचय कराएं। शादियों, पार्टीयों व अन्य स्थानों के भ्रमण के लिए उसे भी लेकर जाएं। तथा विभिन्न प्रकार की जानकारी दें।
- जो भी कार्य विशेषज्ञ घर पर करने को दे उसे नियमित रूप से करें।
- ऐसे बच्चे अगर चलना नहीं भी सीख पाए तो निराश न हों उनके चलने–फिरने के लिए कई उपकरण बाज़ार में उपलब्ध हैं। विशेषज्ञों की सलाह से उन उपकरणों को उपयोग में लाएं, जैसे–व्हील चेयर (पहियादार कुर्सी), बैसाखी, छड़ी, वॉकर इत्यादि।
- जो बच्चे चलने में असमर्थ हैं उनके विषय में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि वे एक ही स्थान पर एक ही स्थिति में न बैठे रहें, इससे उनके जोड़ों में अकड़न या बेड सोर्स (Bed Sores) बन सकते हैं।
- शारीरिक रूप से विकलांग बच्चों के अभिभावकों को चाहिए कि वे उन्हें एक ही जगह न बैठे रहने दें। उन्हें भी गतिशील बनाने का प्रयास करें।
- जो बच्चे ठीक प्रकार से बैठ नहीं पाते उनके लिए विशेष प्रकार की कुर्सी बनाई जाती है। जिससे ये बच्चे इधर–उधर लुढ़के नहीं इसके लिए एक बेल्ट भी लगाया जाता है। सामने की तरफ एक ट्रे लगाई जाती है जिसपर वे अन्य क्रियाकलाप जैसे पढ़ना–लिखना, खाना आदि कर सकते हैं। कुछ कुर्सियों में शौच के लिए भी सुविधा दी जाती है।
- माता–पिता ऐसे बच्चों के साथ धैर्यपूर्वक व्यवहार करें तथा उन्हें सभी क्रियाकलापों में समान रूप से भागीदारी के अवसर प्रदान करें।

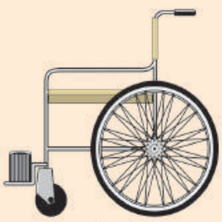

व्हील चेयर

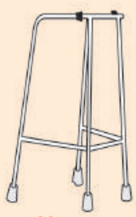

वॉकर

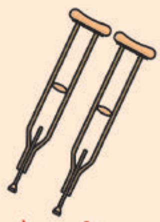

बैसाखी

Copyright © 2006 ARUSHI. All rights reserved.